कुरान और धार्मिक मतभेद

क़ुरान और धार्मिक मतभेद

अर्थात्

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद लिखित "तर्जुमानुल क़ुरआन"

के एक अध्याय का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

सय्यद जहूरुल हुसैन हाशिमी,

भागलपुरी ।

दिल्ली

तर्जुमानुल-क़ुरान कार्यालय

नं० १०, दरियागंज

सन् १९३३ ई०

मूल्य १)

तुममें से हर एक गिरोह के लिए हमने (अलग अलग) धार्मिक नियम और (अलग अलग) रास्ते ठहरा दिये हैं। अगर खुदा चाहता तो तुम सब को एक ही सम्प्रदाय बना देता, लेकिन (उसने ऐसा नहीं किया) इसलिए कि जो कुछ तुम्हें दिया गया है उसी में तुम्हारी परीक्षा करे। पस नेकी की राह में एक दूसरे से आगे बढ़ निकलने की कोशिश करो। अंत में तुम सब को अल्लाह की तरफ लौटना है। फिर वह तुम्हें बतलायेगा कि जिन बातों में एक दूसरे से भिन्नता रखते थे उनकी असलीयत क्या है। — सूरा ५ ४२।

विषय-सूची

भूमिका

मुझे हजारीबाग़ जेल मे मौलाना अबुलकलाम आजाद कृत उर्दू टीका और भाष्य के साथ कुरान पढ़ने का सौभाग्य हुआ। खेद है कि अभी तक पूरी पुस्तक छप कर नहीं निकली। और जो अंश छपा है उसी के देखने से ऐसी धारणा हुई कि यदि इस पुस्तक को हिन्दू पढ सकेंगे तो देश का बडा उपकार होगा।

मौलवी सैयद जहूरुल हुसेन हाशिमी का विचार हुआ कि इसका वह अंश जिसमे इस्लाम का अन्य धर्म्मों के साथ सम्बन्ध दर्शाया गया है अविलम्ब हिन्दी मे अनुवादित करके हिन्दू जनता के सामने रखा जाय। उन्होंने यह कार्य्य कुछ मित्रो के परामर्श और सहायता से आरम्भ भी कर दिया। कुछ दिनों में यह काम समाप्त हो गया, और मुझे भी उर्दू तथा हिन्दी प्रतियो के देखने का सुअवसर मिला। मेरा विश्वास है कि इसे पढ़ कर हिन्दीभाषी इस्लाम के महत्व और उसकी उदारता को समझ सकेंगे और बहुत सी ग़लत फ़हमिया जो फैली हुई है दूर हो सकेगी।

भारतवर्ष में हिन्दू-मुसलिम समस्या बहुत जटिल दीख पडती है। इसके बहुतेरे कारण हैं—ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक। दोनों जातियाँ एक दूसरे के धर्म्म के महत्त्व से अनभिज्ञ हैं और जानकारी प्राप्त करने की उन्हें विशेष सुविधा भी प्राप्त नहीं है।

ऐसी अवस्था मे दोनो एक दूसरे के धर्म्मसम्बन्धी विचारा को सन्देह की दृष्टि से देखती हैं, और मामाजिक तथा धार्मिक रीतियो के कारण स्थान स्थान पर असहिष्णुता का प्रदर्शन करती हैं जिसका रूप कभी कभी अत्यन्त भयङ्कर और अमानुषिक हो जाया करता है।

इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि दोनो जातियों को इसका सुअवसर और प्रोत्साहन दिया जाय कि एक दूसरे के धर्म्म-सम्बन्धी विचारो की जानकारी प्राप्त करें। अविद्या और अज्ञान अनक अनर्थों का कारण हुआ करता है, और आज भारतवर्ष की इस जटिल समस्या के हल करने का एक साधन इस अविद्या और अज्ञान का दूर करना है। यह इस प्रकार की पुस्तको के प्रकाशन और प्रचार से दूर हो सकता है जैसी मौलाना अबुलकलाम आजाद साहिब न लिखी है। हिन्दुओ मे इस प्रकार का प्रयत्न एक दूसरे विद्वान् डाक्टर भगवान दास जी की लेखनीद्वारा हो रहा है।

सच पूछिए तो सभी धर्मो के सर्वोच्च सिद्धान्त थोडे ही हैं और मिलते जुलत हैं। सारे झगडे, आचार-व्यवहार रीति-नीति रस्म रिवाज में भेद के कारण ही होते हैं। जैसा मौलाना साहिब न दिखलाया है इनमे भेद होना अनिवार्य है, क्योंकि देश काल की विभिन्नता से और अलग अलग जातियों के बीच धर्म के प्रचारित होन से सभी बातों मे समानता होना असम्भव था। जब ईश्वर के ससार मे दो मनुष्य अथवा कोई दो चीज़ ठीक एक दूसरे के

समान नहीं हैं और इस वैचित्र्य में भी सुन्दरता और शक्ति झलकती हैं तो धर्मों के सभी आचार-व्यवहार रस्म रिवाज एक समान कैसे हो सकते हैं ? पर हमारी भूल यह है कि हम इन बाह्य आडम्बरो को—इन फुरूआत को—धर्म का मुख्य अङ्ग समझ बैठे हैं और इनके कारण एक दूसरे का सिर तोड कर ईश्वर के उन नियमो का गला घोटते हैं जो सब के लिए समान रूप से मान्य हैं।

आर्य धर्म, जो आज हिन्दूधर्म के नाम से अधिक प्रचलित है, उन्ही सिद्धान्तो को अनादि काल से मानता और प्रचारित करता आया है जिनको इस्लाम ने आज से १३५० वष पूर्व फिर से प्रचारित किया। मौलाना आज़ाद साहिब ने प्रतिपादित किया है कि इस्लाम के दो ही मुख्य सिद्धान्त हे—एक, ईश्वर में अटल विश्वास और दूसरा सदाचार का जीवन। आर्यग्रन्थो से इसी आशय के अनेक प्रमाण उद्धृत किये जा सकते है, और जो इस विषय का विशेष रूप से अध्ययन करना चाहेंगे उनको इसमें कोई कठिनाई नहीं होगी। यहाँ पर कुछ उद्धरण दिये जाते हैं जो इस विषय मे दोनो धर्मों के सामञ्जस्य को प्रमाणित करते हैं।

एवमाचारतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम्।
सवस्य तपसो मूलमाचार जगृहु परम्॥

मनुस्मृति १। ११०

इस प्रकार मुनियों ने आचार से धर्म प्राप्त देखकर सब तपों के मूल आचार को ग्रहण किया है—

धृति क्षमादमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशक धर्मलक्षणम् ॥

मनु ६ । ८२

धैर्य्य, क्षमा, दम (अर्थात् मन को रोकना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (बाहर भीतर की शुद्धि), इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या (अर्थात् ब्रह्मविद्या) सत्य और अक्रोध—ये दस धर्म्म के लक्षण है ।

अहिंसा सत्यमस्तय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
एत सामासिक धर्म चातुवर्ण्येऽब्रवीन्मनु ॥

मनु १० । ६३

अहिसा, सत्य, चारी न करना, पवित्रता और इन्द्रियनिग्रह, यह चारो वर्णा का सक्षिप्त धर्म मनु न कहा है ।

सर्वेषा य सुहृन्नित्य सर्वेषा च हित रत ।
कर्म्मणा मनसा वाचा स धर्म वेद जाजले ॥

महाभारत—शातिपर्व २६१ । ९

ह जाजल ! उसी ने धर्म को जाना जो कर्म से, मनसे और वचन से सब का हित करन मे लगा हुआ है और जो सभा का नित्य स्नेही है ।

श्रीमद्भगवद्गीता म तो बहुत से श्लोक मिलेंगे जो इस विषय को प्रतिपादित करत हैं । यहा केवल बारहवें अध्याय की ओर

ध्यान आकर्षित किया जाता है और उसी मे से कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

अद्वेष्टा सर्वभूताना मैत्र करुण एव च।
निर्ममो निरहकार समदुःख सुखःक्षमी ॥
सन्तुष्ट सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चय ।
मय्यर्पित मनो बुद्धिर्योमद्भक्त समे प्रिय ॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च य ।
हर्षामर्ष भयोद्वेगै मुक्तो य स च मे प्रिय ॥
अनपेक्ष शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथ ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्त स मे प्रिय ॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्य स मे प्रिय ॥
सम शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयो ।
शीतोष्ण सुखदुःखेषु सम सङ्गविवर्जित ॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेत स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नर ॥
य तु धर्म्यामृतमिद यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रिया ॥

भ० गी० १२ ।

जो किसी प्राणी से भी द्वेष न करे, जो सब के साथ मित्रता का वर्त्ताव करे, जो दयालु हो, जो ममता का त्याग करे, जो अहकार

से रहित हो, जो दु ख सुख को समान माने, जो क्षमाशील है जो सदा संतोषी है, जिसने अपनी आत्मा को जीत लिया, जिसका निश्चय दृढ है जिसने अपना मन और बुद्धि मुझमे (ईश्वर मे) अर्पण कर दी है जो मेरा भक्त है—ऐसा योगी मुझको प्यारा है।

जिससे लोग उद्विग्न नहीं होते और जिसे लोगो से उद्वेग नही होता जो हर्ष, क्रोध, भय, और घबराहट से मुक्त है—वह मुझे प्यारा है।

जो किसी से कुछ इच्छा नहीं रखता, जो पवित्र है, कुशल है, उदासान है, किसी बा त का दु ख नहीं मानता, जिसने (काम्यफलो के) सब आरभो को त्याग दिया है—ऐसा मेरा भक्त मुझ प्यारा है।

जो न हर्षित होता है, न द्वष करता है, न शोक करता है, न इच्छा करता है, जिसन भल और बुर (दोनो तरह के कर्मफलो) का त्याग कर दिया है—ऐसा मेरा भक्त मुझे प्यारा है।

जो शत्रु और मित्र के साथ समान व्यवहार करता है, जो मान और अपमान, सदा और गर्मा, सुख और दु ख मे समान रहता है, जो सगरहित (बलौस) है, जिसके लिए निंदा और स्तुति बराबर है, जो मौनी (मितभाषी) है, जहाँ तहाँ से जो कुछ मिल जाय उसी से सतुष्ट रहता है, जिसका काई रहन का स्थान नहीं, जिसकी बुद्धि स्थिर है—ऐसा मेरा भक्त मुझे प्यारा है।

जो श्रद्धा के साथ ईश्वरपरायण होकर इस धर्मामृत का ठीक ठीक सेवन करते हैं—ऐसे मरे भक्त मुझे बहुत प्यारे है।

मौलाना ने एक विषय और भी प्रतिपादित किया है, और वह यह है कि ईश्वर ने समय समय पर सभी देशो में अपने पैग़म्बर भेजे हैं जिन्होने धर्म की शिक्षा दी है। यह गीता के उन श्लोकों से भी प्रतिपादित होता है जो चौथे अध्याय मे आये हैं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे॥

गी० ४।७, ८

हे अर्जुन! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब मैं अवतार लेता हूँ। सज्जनो की रक्षा, दुर्जनो के विनाश और धर्म की पुनःस्थापना के लिए मैं युग युग मे पैदा होता हूँ।

मै आशा करता हूँ कि हिन्दीभाषी इस छोटी पुस्तिका से लाभ उठावेंगे और मौलाना अबुलकलाम आज़ाद कृत कुरान के पूरे भाष्य के हिन्दी संस्करण का इन्तिज़ार करगे। मैं यह भी आशा करता हूँ कि पूरे भाष्य को पढ़ने की उनकी यह इच्छा शीघ्र ही पूरी होगी।

राजेन्द्रप्रसाद

हज़ारीबाग सेन्ट्रल जेल,
आषाढ़ कृष्ण ५ सम्वत् १९८९

निवेदन

१९३२ ई० को जनवरी में जब सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ, तो विहार प्रान्त के अन्य देश सेवकों के साथ मुझे भी गिरफ्तार होने की इज्जत हासिल हुई। मैं हज़ारीबाग जेल भेजा गया। वहाँ मुझे अभी थोड़े ही दिन बीते थे कि मौलाना अबुलकलाम आज़ाद का "तर्जुमानुल कुरआन" यानी कुरान का उर्दू भाष्य छप कर प्रकाशित हुआ, और उसकी एक प्रति जेल के अन्दर मुझे मिल गई। यह पुस्तक कैसी है और इसके अन्दर क्या अमूल्य रत्न भरे हे, इसके लिए सिर्फ इतना कह देना काफी है कि यह मौ० अबुल-कलाम आज़ाद के मस्तिष्क और कलम से निकली है। मौलाना आज़ाद आज हिन्दुस्तान के मुसलमान लेखकों में सर्वोच्च श्रेणी के लेखक मान जाते हैं, और उनके कलम से निकली हुई एक एक पक्ति उस श्रद्धा तथा प्रतिष्ठा के साथ पढ़ी जाती है जो उर्दू भाषा के अन्य किसी लेखक को प्राप्त नहीं है।

जब इस पुस्तक की जेल के दोस्तों में चर्चा हुई, तो सब ने बड़े शौक से इसका अध्ययन किया, और एक साथ सब को ख्याल हुआ कि अगर इसका हिन्दी में अनुवाद हो जाय, तो इससे देश तथा साहित्य की बड़ी सेवा होगी।

हिन्दुस्तान में एक हज़ार वर्ष से हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ है। परमात्मा की यही इच्छा हुई कि दोनों धर्मों के मानने-

वाले एक ही देश मे बसें, और एक ही देश को अपनी मातृभूमि समझें। इसलिए जरूरी था कि हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के धर्म्म और मजहब का भली भाति समझते और एक दूसरे का आदर करते। लेकिन बद नसीबी से मौजूदा जमाने मे पृथकत्व और और बेगानगी की कुछ ऐसी हवा चल गई है कि एक दूसरे को समझना तो दूर रहा, एक दूसरे के खिलाफ तरह तरह के पक्षपात और गलतफहमिया दोना ओर के लोगो मे पैदा हो गई है, जिसका परिणाम यह है कि एकता की लगातार कोशिश करन पर भी हिन्दू मुसलिम नाइत्तिफ़ाक़ी और वैमनस्य रोज बरोज बढते ही चले जाते हैं।

मुसलमाना ने अपने साहित्य के उत्कर्ष काल म हिन्दुस्तान के धार्मिक ग्रन्थो की खोज की थी। उन दिना अबूमअशर फ़लकी, अबूरैहान अल-बीरूनी, और शहरिस्तानी जैसे भारतीय साहित्य के पडित पैदा हुए। फिर जब हिन्दुस्तान में इस्लामी राज्य कायम हो गया ता सुलतान फीरोजशाह, जैनुल आबिदीन, अकबर और दारा शिकोह जैसे साहित्यप्रेमी बादशाहो ने हिन्दू धर्म्मग्रन्थ और हिन्दू साहित्य की पुस्तकें फारसी भाषा में अनुवाद कराई। इसी तरह हिन्दुओ म भी इस्लामी साहित्य के जाननेवाले पैदा हुए जिन्होंन इस्लामी अध्यात्म पर बहुत सी किताब लिखीं जो आज तक मौजूद हैं। इस्लाम और हिन्दू धर्म्म के इसी पारस्परिक प्रेम और मेल जोल का परिणाम था जिसने कबीर और गुरु नानक की अमूल्य शिक्षाओं का रूप धारण किया। लेकिन अफसोस है कि अब

यह बातें स्वप्नवत् हो गई हैं। बेगानगी की इतनी चौडी नदी दोनों धर्म्मों के माननेवालों के बीच बहने लगी है कि एक किनारे पर बसनेवाला दूसरे किनारे की कोई खबर ही नहीं रखता।

वर्षों से मेरा विश्वास है कि हिन्दू-मुसलिम एकता सिर्फ राजनीतिक शिक्षा द्वारा क़ायम नहीं हो सकती। वास्तविक कारण जिसने आपस के प्रेम की राह मे रोडे बिछा दिये हैं धार्म्मिक सकीर्णता और मजहबी पक्षपात है। जब तक यह चीज़ दूर नहीं होगी, और सच्ची धार्मिक शिक्षा के द्वारा लोग एक दूसरे से इत्तिफ़ाक़ और प्रेम न अनुभव करेंगे, केवल राजनीतिक एकता का उपदेश कुछ फायदा न करेगा। सांस्कृतिक (Cultural) एकता ही वास्तविक एकता है।

इस लक्ष्य तक पहुँचने की सिर्फ एक ही राह है, और वह यह है कि इस तरह के सहानुभूतियुक्त धार्मिक अनुसन्धान के परिणामों को साधारण जनता मे खूब प्रचार किया जाय, और कोशिश की जाय कि मुसलमान हिन्दूधर्म को उसके असली रूप मे देख सकें, और हिन्दू इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से जानकारी प्राप्त कर सकें। जब दोनों गिरोह एक दूसरे के धर्म्म को पूर्ण रूप से समझ लेंगे तो पारस्परिक द्वेषभाव तथा वैमनस्य अनायास दूर हो जायगा।

यही विचार था कि जो उस समय जेल मे तमाम दोस्तों के सामने आया, और उनके परामर्श से मैंने "तर्जुमानुल कुरान" का हिन्दी अनुवाद करना शुरू कर दिया।

उस वक्त चूँकि पूरी किताब का अनुवाद करना कठिन था। इसलिए आपस की सलाह से तै पाया कि पहल इसके उस भाग का अनुवाद किया जाय जिसमें समस्त धर्मों के मूल सिद्धान्त के एक होन की व्याख्या का गई है। अनुवाद प्रारम्भ कर दिया गया और मेरी रिहाई से पहले वह समाप्त भी हो गया।

उर्दू से हिन्दी मे अनुवाद करना यद्यपि कठिन कार्य नहीं है, क्योंकि भाषा एक ही है, फक सिर्फ इतना ही है कि उर्दू म फारसी और अरबी के शब्द अधिक आते है और हिन्दी में सस्कृत के, और वह फारसी लिपि मे लिखी जाती है, यह देवनागरी मे, तथापि "तर्जुमानुल कुरआन" के अनुवाद का काम इतना सहज न था। बडी मुश्किल जो इस काम मे पेश आई वह मौ० अबुलकलाम क उर्दू स्टाइल को हिन्दी भाषा मे खपाना था। जो लोग आज कल के उर्दू साहित्य से जानकारी रखते हैं, वे जानते हैं कि मौ० अबुलकलाम आज़ाद न उर्दू मे एक नइ लेखशैली पैदा की है, जिसका इस समय तक उनके सिवा कोइ दूसरा मास्टर नहीं। उनकी लेखशैली और ओज को हिन्दी मे कायम रखना अत्यन्त कठिन था। जहा तक मेरी शक्ति मे था मैंने अपन काबिल दोस्तो की मदद से इसकी कोशिश की, लेकिन मै स्वीकार करता हूँ कि मुझे इसमे सफलता नहीं मिली। यदि उनके लेख का भाव ही मेरे द्वारा ठीक ठीक तौर पर हिन्दी में आ सका हो तो इसी में मैं अपना सौभाग्य समझूँगा।

अनुवाद यद्यपि मेरे कलम से हुआ है, लेकिन असल में मुझसे ज्यादा यह मेरे जेल के दोस्तों और पूज्य महानुभावों की मेहनत और योग्यता का परिणाम है, और मेरा फ़र्ज़ है कि जिन महानुभावो न खुशी और उत्साह के साथ हिन्दी अनुवाद की पुनर.वृत्ति मे मेरी मदद की है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ। मेरे मुहतरम लीडर बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी, बिहार प्रान्तीय-काम्ग्रेस कमेटी के सहकारी मन्त्री बाबू मथुराप्रसाद जी, श्री बा० नारायण जी गौरैया कोठी सारन (भूतपूर्व सदस्य ऐसेम्बली), काशी विद्यापीठ के श्री राजवल्लभ जी, और मेरे दिली दोस्त बाबू मोती लाल जी देवघरवाले, इस काम मे मदद देते रहे। इन महानुभावों की महायता के बिना मेरा इस कार्य को सम्पूर्ण करना कठिन होता।

विशेषत मुझे बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी का शुक्रिया अदा करना है, जिन्होने पूरे अनुवाद को देखा, और अपने कलम से इसकी भूमिका लिख दी।

जब मै मौलाना अबुलक्लम आज़ाद की खिदमत मे किताब का मसौदा लेकर कलकत्ते आया तो पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी, सम्पादक 'विशाल भारत,' से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके दर्शन न मेरे हृदय मे उत्साह की लहर दौड़ा दी। उन्होंने अपने अमूल्य परामर्श और हर प्रकार की सहायता का वचन देकर मुझे प्रेमसूत्र मे बाँध लिया। मैं उनका अत्यन्त ऋणी हूँ।

उनकी ओर कृतज्ञता प्रकट कर सकना मेरे लिए असम्भव है— एक हृदय है जो मैं उनकी सेवा मे अर्पण करता हूँ।

अब मैं पाठको का यान चन्द आवश्यक बातो की ओर आकर्षित करना चाहता हू।

(१) इस ग्रन्थ में कुरान की शिक्षा जो कुछ प्रकट की गई है, वह एक ऐसे विख्यात विद्वान् की लेखनी से निकली है जो आज न सिर्फ हिन्दुस्तान के मुसलमानो मे बल्कि बाहर की इस लामी दुनिया मे भी इस्लाम के धार्म्मिक ग्रन्थो का एक बहुत बडा पण्डित माना जाता है। कुरान के तत्त्वज्ञान के उन जैसे ज्ञाता हिन्दुस्तान म अत्यन्त कम विद्यमान हैं, यह बात विद्वत् समाज मे निर्विवाद मान ली गई है। भारतीय मुसलमानों मे एक बडी सख्या एसे लोगा की मौजूद है जा राजनीतिक मामले म मौलाना से सहमत नहीं है, लेकिन वे भी इस्लाम के धार्मिक साहित्य और विशेष कर कुरान के विषय मे मुक्तकण्ठ से मौलाना को प्रमाण मानत हैं। इसलिए यह कहना अत्युक्ति न होगा कि प्रामाणिकता की दृष्टि से इस पुस्तक का स्थान बहुत ऊँचा है।

(२) आज कल प्रत्येक धर्म के अनुयायियो मे नवीन विचार के कुछ लोग एस पैदा हा गये हैं जो प्राचीन धर्मग्रन्थो के अर्थों को खींच तान कर आधुनिक युग के नवीन आविष्कारों से मिला देना चाहत है। वेद, तौरात, इजील और कुरान के बारे मे इस दृष्टि से बहुत कुछ कहा जा चुका है, और कई लोग तो इतनी दूर चले गये

हैं कि उनके नजदीक साइन्स के सभी नये नये आविष्कार और उसकी तरक्कियां भी वेद, तौरात, इंजील और कुरान में मौजूद हैं।

लेकिन मौलाना अबुलकलाम आज़ाद इस ख्याल के विरोधी हैं। उन्होंने स्वयं "तर्जुमानुल कुरान" की भूमिका मे लिखा है कि इस तरह की कोशिश निरर्थक ही नहीं है बल्कि दियानतदारी और सचाई का खून करना भी है। अगर हम जानकारी और सच्चाई के साथ धार्मिक खोज करना चाहते हैं तो हमे चाहिए कि धार्मिक ग्रन्थो का बिल्कुल निष्पक्ष होकर अध्ययन करें, और उनका वही मतलब ले जो उनकी भाषा और वाक्यो का बिना खींच तान के हो सकता है, और जैसा उनके माननेवालो ने हमेशा समझा है।

यही वजह है कि वह जो कुछ लिखते हैं उसके साथ ही कुरान की असल आयत दे देते हैं, ताकि हर व्यक्ति खुद फैसला कर ले कि जो मतलब पेश किया गया है, वह असल कुरान में मौजूद है या नहीं।

(३) मौलाना ने कुरान की शिक्षा को बतलाते हुए यह सिद्धान्त पेश किया है कि समस्त धर्मों का मूलतत्त्व एक ही है, एक ही तरह पर सारी कौमो और मुल्को को ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ है, और सभी तरीके असल मे सच हैं। अगर सब धर्मों के माननेवाले इसको ठीक तौर पर समझ लें, तो धर्म्म का सारा झगडा एक क्षण मे खतम हो जाय और संसार को उसकी वह खोई हुई सम्पत्ति मिल जाय जिसके बिना कभी अमन और

शाति स्थापित नहीं हो सकती। बद-नसीबी से आज हमारे देश म सब से अधिक अज्ञानता इसी विषय की है, और मुल्क का सब से बडा सेवक वह है जो इस हकीकत को लागो के दिलो में उतार दे।

अफसोस यह है कि इस किस्म की किताबों को आम तौर पर प्रकाशित करन और उनके प्रचार करन का हमारे मुल्क मे कोई इन्तिजाम नही। लोग दूसरे दूसरे कामो के पीछे पड हैं, लेकिन इस काम के लिए जो सारे कामो की जड है, किसी को फिक्र नही। आवश्यकता थी कि मौलाना आजाद की यह पुस्तक हजारो की सख्या म मुसलमानो के बीच बाटी जाती, और उसी तरह उसका हिन्दी अनुवाद भी हिन्दू भाइया म बाटा जाता। यदि इस प्रकार का साहित्य देश के शिक्षित लोगो मे वितरण हो सकता, तो फिर थोड समय के अन्दर देश का वायुमण्डल ही बदल जाता और उसके सार दु ख दूर हो जात। हमारे मुल्क का मुख्य रोग असली धार्मिक सिद्धान्तो की अज्ञानता है। जब तक इसका इलाज नहीं होता, तब तक कोइ राजनीतिक समझौता (पक्ट) या सुधार हमारी इस मातृभूमि का शान्ति प्रदान करन मे समर्थ न हो सकेंगे।

खाकसार—

जहूरुल हुसैन हाशिमी भागलपुरी

सन्ट्रल जेल, हजारीबाग।

بسم الله الرحمن الرحيم

१ । हिदायत (ज्ञान-विकास) ।

हिदायत

हिदायत का अर्थ है पथ-प्रदर्शन, राह दिखाना, या राह पर लगा देना । अब हम हिदायत के उन भिन्न भिन्न दरजो और किस्मो पर नज़र डालना चाहते हैं जिनका ज़िक्र कुरान में आया है । इनमे 'वही' (ईश्वर प्रेरणा) और 'नबुव्वत' (ईश्वरीय आदेशो का प्रचार), इन दोनो का एक खास दरजा है ।

उस पालनकर्त्ता परमात्मा ने जिस तरह सब प्राणियों को उपयुक्त शरीर और शक्तिया प्रदान की है उसी तरह उनके पथ प्रदर्शन के लिए भी स्वाभाविक साधन पैदा कर दिये हैं । यही स्वाभात्रिक पथ-प्रदर्शन भूत-मात्र को जीवित रहने और अपने जीवन के आधार ढूँढ़ने के मार्ग पर लगाता है और उन्हें जीवन के आवश्यक साधनो की खोज म प्रवृत्त करता है । अगर यह स्वाभाविक पथ प्रदशन मौजूद न होता तो असम्भव था कि कोई भी प्राणी जीवन और उसे क़ायम रखने का सामान मुहैया कर सकता । कुरान ने इसी सचाई की ओर बार बार ध्यान दिलाया है । वह कहता है कि भूतमात्र के जन्म से लेकर उसके परिपक्व होने तक कई दरजे हैं, जिनमें आखिरी दरजा हिदायत का है । सूरा ८७ मे क्रमानुसार चार दरजो का ज़िक्र आया है ।

الدی حلق فسوی و الدی
ودر فهدی

वह प्रतिपालक जिसने हर चीज़ पैदा की, फिर उसे दुरुस्त किया, फिर हर एक के लिए उसका क्षेत्र निश्चित कर दिया, और फिर उसके सामने (कर्म का) पथ खोल दिया। (सूरा ८७, आयत २)

अर्थात् प्रत्येक सम्भूत पदार्थ की चार अवस्थाएँ हैं। सृष्टि (तखलीक), दुरुस्ती (तसवीय्या) क्षेत्र निर्देश (तक़दीर) और पथ प्रदर्शन (हिदायत)।

सृष्टि का अर्थ है अव्यक्त के व्यक्त होना। दुरुस्ती (तसवीय्या) का अर्थ है हर चीज़ का जिस तरह होना चाहिए ठीक उसी तरह उसे दुरुस्त करना या सजाना। तक़दीर का अर्थ क्षेत्र निश्चित करना है। हिदायत यानी पथ प्रदशन का अर्थ है प्रत्येक प्राणी के लिए जीवन और उसके साधन के मार्ग का निदश करना। जैसे, पक्षी की योनि को ही लीजिए। पक्षी के अस्तित्व का व्यक्त होना उसकी सृष्टि (तखलीक) है। उसकी भीतरी और बाहरी शक्तियों का इस प्रकार विकसित होना जिससे उसमे शारीरिक सगठन और सामजस्य आ जाय दुरुस्ती (तसवीय्या) है। उसकी भीतरी और बाहरी शक्तियो की क्रिया के लिए एक क्षत्र या सीमा बाध देना, जिससे वह बाहर न जा सके, तकदीर है। मसलन्,

पक्षी हवा में ही उड़ेंगे, मछलियों की तरह पानी मे तैरेंगे नहीं। और उनमें अन्त प्रवृत्ति (वुजदान) और इन्द्रियों (हवास) की रोशनी पैदा होना जिससे उनको अपना जीवन और अस्तित्व कायम रखने का ज्ञान प्राप्त होता है और जिससे वे जीवन के साधन ढूँढते और प्राप्त करते हैं, हिदायत यानी पथ-प्रदर्शन है।

कुरान कहता है कि ईश्वर की पालनशक्तिका साथकता इसी म था कि जिस तरह उसने हर एक प्राणी को उसका स्थूल रूप प्रदान किया, भीतरी और बाहरी शक्तियाँ दीं, उसका कर्मक्षेत्र निश्चित कर दिया, उसी तरह उसके लिए हिदायत यानी पथ-प्रदर्शन के साधन भी प्रस्तुत कर दे।

ربنا الذی اعطی کل شیء خلقہ ثم ھدی	हमारा प्रतिपालक वह है जिसने हर चीज का रूप देकर उसके सामने उसका कर्मक्षेत्र खोल दिया। (सू॰ २०, आ० ५२)

हजरत इब्राहीम और उनकी कौम के लोगों म जो बात चीत हुई थी, कुरान म जगह स्थान स्थान पर उल्लेख है, उसम इब्राहीम अपने विश्वास की घोषणा करते हुए कहते हैं—

و اذ قال ابراھیم لابیہ و قومہ اننی براء مما تعبدون الا الذی فطرنی فانہ سیھدین	और जब इब्राहीम ने अपने पिता और अपनी क़ौम के लोगों से कहा था कि (स्मरण रखो) तुम जिन (देवताओं) की

> उपासना करते हो, उनसे मुझे कोई सरोकार नहीं। मेरा सम्बन्ध तो सिर्फ उस प्रभु से है जिसने मुझे पैदा किया और वही मेरा पथ प्रदर्शक होगा। (सू० ४३, आ० २५)

"अल्लज़ी फतरनी फइन्नहू सयह्दीन," यानी, जिस सृष्टिकर्त्ता ने मुझे शरीर और अस्तित्व प्रदान किया, अवश्य ही उसने मेरी हिदायत का सामान भी पैदा कर दिया होगा। सूरा २६ मे यही बात अधिक विस्तार से बयान की गई है।

الذى خلقنى فهو يهدين
والذى هو يطعمني و يسقين
و اذا مرضت فهو يشفين

जिस प्रतिपालक ने मुझे पैदा किया है वही मुझे हिदायत करेगा, और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है और जब बीमार हो जाता हूं तो मुझे चंगा करता है। (सू० २६, आ० ७६)

यानी जिस प्रतिपालक की पालनशक्ति ने मेरे जीवन की सभी आवश्यकताओं का सामान कर दिया है, जो मुझे भूख मिटाने के लिए भोजन, प्यास बुझाने के लिए पानी, और अस्वस्थ हो जाने पर स्वास्थ्य प्रदान करता है, उसके लिए यह कैसे सम्भव है कि मुझे पैदा करके उसने मेरी हिदायत का सामान न किया हो?

अगर उसने मुझे पैदा किया है तो यह निश्चय है कि वही खोज और प्रयत्न मे मेरा पथ-प्रदर्शन भी करेगा। सूरा ३७ मे यही मतलब इन शब्दो मे जाहिर किया गया है—

انی ذاهب الی ربی سیهدین — मैं (सब ओर से हट कर) अपने परवरदिगार की ओर जाता हू, वही मेरी हिदायत करेगा। (सू० ३७, आ० ६७)

आयत के अन्दर "रब्बी' शब्द पर ध्यान दीजिए। वह मेरा "रब्ब" यानी पालक है। और जब वह रब्ब है तो जरूरी है कि वही मेरे लिए कर्म का मार्ग भी खोल दे।

हिदायत के पहले तीन दरजे।

हिदायत के भी कई दरजे हैं जिन्हें हम प्राणियो मे अनुभव करते हैं। सबसे पहला दरजा अन्त प्रवृत्ति (वुजदान) का है। अन्त प्रवृत्ति से तात्पर्य जीवो के अन्दर की स्वाभाविक और आन्तरिक प्रेरणा है। हम देखते है कि बच्चा पैदा होते ही अपने आहार के लिए रोने लगता है और बिना किसी बाहरी प्रेरणा के माँ का स्तन मुह मे लेकर पीने लगता और अपना आहार ग्रहण करने लगता है।

अन्त प्रवृत्ति (वुजदान) के बाद इन्द्रिय ज्ञान (हवास) की हिदायत का दरजा है, और वह इससे ऊँचा है। इससे हमको

देखने, सुनने, चखने, छूने और सूँघने की शक्ति प्राप्त होती है, और इन्ही के जरिये हम बाहर की चीजो का ज्ञान प्राप्त करते है।

स्वाभाविक हिदायत के यह दोनो दरजे मनुष्य और पशु सबके लिए है। परन्तु हम देखते हैं कि मनुष्य के लिए हिदायत का एक तीसरा दरजा भी मौजूद है, और वह अक्ल यानी बुद्धि की हिदायत है। इस तीसरी हिदायत ने ही मनुष्य के लिए अपरिमित उन्नति का द्वार खोल दिया है जिसके कारण उसने पृथ्वी के जीवो मे सबसे अधिक उन्नत प्राणी का पद प्राप्त कर लिया है।

अन्त प्रवृत्ति (वुजदान) मनुष्य में खोज और प्रयत्न का उत्साह पैदा करती है। इन्द्रियाँ (हवास) उसके लिए ज्ञान का सचार करती है, और बुद्धि परिणाम और व्यवस्था निश्चित करती है।

पशुओ को इस आखिरी दरजे की आवश्यकता न थी इसलिए वे पहले दोनो दरजे, अर्थात् अन्त प्रवृत्ति और इद्रिय ज्ञान, तक ही रह गये। लेकिन मनुष्य को यह तीनो दरजे प्राप्त हुए।

बुद्धि का तत्त्व क्या है? वास्तव मे यह उसी शक्ति कि उन्नत अवस्था है जिसने पशुओ मे अन्त प्रवृत्ति और इद्रिय ज्ञान का दीपक प्रज्वलित किया है। जिस तरह मानव-शरीर पार्थिव शरीरों मे सबसे अधिक उन्नत है उसी तरह उसकी आन्तरिक शक्ति भी अन्य सभी आन्तरिक शक्तियो से बढी चढी है। जीव की वह चेतनशक्ति जो वनस्पति मे अप्रकट और पशु की अन्त प्रवृत्ति

और उसके इंद्रियज्ञान में प्रकट थी, वही मनुष्य मे पहुँचकर पूर्णता को प्राप्त हुई और बुद्धि-तत्त्व कहलाने लगी।

हम देखते हैं कि स्वाभाविक हिदायत के इन तीनों दरजों मे से हर एक की अपनी विशेष सामर्थ्य और उसका एक विशेष कार्यक्षेत्र है, जिससे वह आगे नही बढ सकता। अगर उस दरजे से ऊँचा दूसरा दरजा मौजूद न होता तो हमारी आन्तरिक शक्तियाँ उस सीमा तक उन्नत न हो सकतीं जिस सीमा तक कि अब हमारी ही आन्तरिक प्रेरणा से वे उन्नति कर रही हैं।

अन्त प्रवृत्ति हम मे खोज और प्रयत्नशीलता उत्पन्न कर हमे जीवन की आवश्यकताओ की प्राप्ति की ओर लगाती है, लेकिन हमारे भौतिक शरीर के बाहर जो कुछ मौजूद है उसका ज्ञान हम नही कराती। यह काम इन्द्रियो का है। कान सुनता है, आँख देखती है, नाक सू घती है, जिह्वा स्वाद लेती है, और हाथ स्पर्श करता है, और इस तरह हम अपने शरीर से बाहर के समस्त इन्द्रिय ग्राह्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करते है। परन्तु यह इन्द्रिय-ज्ञान एक खास हद तक ही काम दे सकता है, उससे आगे नहीं बढ सकता। आँख देखती है, मगर सिर्फ उसी हालत मे जब कि देखने की सब शर्त मौजूद हो। अगर किसी एक भी शर्त का अभाव हो—जैसे, प्रकाश न हो, या फासला अधिक हो—तो हम आँख रहते हुए भी किसी पदार्थ को साक्षात् नही देख सकते। इसके अतिरिक्त इन्द्रियाँ चीजों का सिर्फ आभास करा सकती हैं, पर केवल इसी से काम नहीं चलता। हमे आवश्यकता होती है

नतीजे निकालने की, उन्हें परखने की, उनसे अहकामात, यानी व्यवस्था, स्थिर करने की, और सार्वभौमिक नियम प्रतिपादन करने की। यह सब काम बुद्धि का है। बुद्धि इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान को तरतीब देती है और उनसे सार्वभौमिक नतीजे और व्यवस्थाएँ स्थिर करता है।

जिस तरह अन्त प्रवृत्ति के काम के पूरा करने के लिए इन्द्रियों और इन्द्रियग्राह्य पदार्थों की आवश्यकता है उसी तरह इन्द्रियों के काम की दुरुस्ती और निगरानी के लिए बुद्धि की जरूरत है। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान केवल अपूर्ण ही नहीं वरन् प्राय भ्रामक और मिथ्या भी होता है। एक बडा भारी गुम्बद अथवा कोई विशाल पदार्थ दूर से देखने पर हम छोटे से काले विन्दु से अधिक नहीं दिखाई देता। हम बीमारी की हालत में शहद खाते हैं और वह हमारी जबान के बिगड जाने से हमको कडवा मालूम पडता है। पानी में सीधी लकडी की परछाई हमें टेढी देख पडती है। प्राय बीमारी के कारण कान बजने लगते हैं और ऐसी आवाजें सुनाई देती हैं जिनका बाहर कोई अस्तित्व नहीं होता। अगर इन्द्रियों के ऊपर एक और शक्ति अर्थात् बुद्धि न होती तो इन्द्रियों की अपूर्णता के कारण सचाई को जान सकना हमारे लिए असम्भव हो जाता। परन्तु ऐसी अवस्थाओं में बुद्धि आ मौजूद होती है और इन्द्रियों की असमर्थता में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। इस बुद्धि के द्वारा ही हम जान लेते हैं कि सूर्य एक महान् और विशाल पिण्ड है, चाहे हमारी आँख उसे एक

सुनहरी थाली के बराबर ही क्यों न देखे। इस बुद्धि से हम जान लेते है कि शहद वास्तव में मीठा है, चाहे हमारी स्वादेन्द्रिय के बिगड जाने स वह हमे कडवा ही क्यों न मालूम पड। इसी तरह बुद्धि बतलाती है कि कभी कभी खुश्की बढ जाने के कारण कान बजने लगते हैं और इस हालत में जो आवाज सुनाई देती है वह बाहर की नहीं बल्कि हमारे ही दिमाग की गूज है।

हिदायत का चोथा दरजा

जिस तरह अन्त प्रवृत्ति के बाद हमें इन्द्रियो की ओर से हिदायत मिलती है—क्योकि अन्त प्रवृत्ति एक खास हद से आगे नही बढ़ सकती—और जिस तरह इन्द्रियों के बाद बुद्धि प्रकट हुई, क्याकि इन्द्रियाँ भी एक खास हद से आगे नहीं बढ सकती थीं, ठीक उसी तरह हम अनुभव करते है कि बुद्धि के बाद भी उससे आगे की हिदायत के लिए कोई उच्चतर शक्ति होनी चाहिए, क्योंकि बुद्धि भी एक खास हद से आगे नही बढ सकती और बुद्धि के कार्यक्षेत्र के बाद भी एक विशाल क्षेत्र बाक़ी रह जाता है। बुद्धि का कार्य क्षेत्र जैसा और जितना है वह सब इन्द्रियज्ञान की परिधि मे सीमित है, यानी बुद्धि सिर्फ उसी हद तक काम दे सकती है जिस हद तक हमारी ज्ञानन्द्रियाँ जानकारी करा सकें। परन्तु हमारे इन्द्रियज्ञान की सीमा के आगे क्या है? उस परदे के पीछे क्या है जिसके आगे हमारी इन्द्रियो की पहुँच नहीं है? यहाँ पहुँच कर बुद्धि असमर्थ और बेकार हो जाती है, बुद्धि की हिदायत आगे हमे कोई प्रकाश नहीं पहुँचा सकती।

जहा तक मनुष्य के क्रियात्मक जीवन का सम्बन्ध है बुद्धि उस के पथ प्रदर्शन के लिए न तो हर हाल म काफी है और न हर हाल मे प्रभावोत्पादक ही। मनुष्य का मन तरह तरह की वासनाओं और तरह तरह के भावो म इस तरह उलझा हुआ है कि जब कभी बुद्धि और वासनाओ के बीच सघर्ष होता है तो विजय प्राय वासनाओ ही की होती है। बुद्धि हमे अनक बार विश्वास दिलाती है कि अमुक कार्य हानिकर और घातक है, लेकिन वासनाएँ हमे प्रेरित करती हैं और हम उस काम से अपन को राक नहीं सकते। बुद्धि की बडी स बडी दलील भी ऐसा नही कर सकती कि हम क्रोध की हालत म बेकाबू न हो जाय और भूख की हालत मे हानिकर भोजन की ओर हाथ न बढाएँ।

परमेश्वर की पालकता के लिए यदि यह आवश्यक था कि वह हमे अन्त प्रवृत्ति के साथ साथ ज्ञानेन्द्रियाँ भी दे, क्योकि हमारे पथ प्रदर्शन म अन्त प्रवृत्ति एक खास हद से आगे नही बढ सकती, तो क्या यह आवश्यक न था कि बुद्धि के साथ वह हमे कुछ और भी दे, क्योकि बुद्धि भी एक खास हद से आगे नही बढ सकती और मानवबुद्धि हमारे कमो की दुरुस्ती और उनके नियत्रण के लिए पर्याप्त नही है?

कुरान कहता है कि यह आवश्यक था और इसी कारण उस दयालु परमात्मा न मनुष्य के लिए हिदायत के चौथे दरजे का भी सामान कर दिया। इसी को कुरान 'वही' और 'नबुव्वत' का नाम देता है। इसीलिए हम देखते है कि कुरान मे जहाँ तहाँ इन

चारो दरजों की हिदायत का ज़िक्र किया गया है, और इन्हें ईश्वर की पालकता का सर्वोत्तम प्रसाद माना गया है।

انا خلقنا الانسان من نطفة امشاج نبتليه فجعلناه سميعا بصيرا - انا هديناه السبيل اما شاكرا واما كفورا

हमने मनुष्य को रजवीर्य के मेल से पैदा किया (जिसे एक के बाद एक हम विविध अवस्थाओं में पलटते हैं), फिर हमने उसे सुननेवाला और देखने वाला बना दिया। हमने उसके सामने कर्म करने का क्षेत्र खोल दिया है। अब यह उसका काम है कि चाहे वह कृतज्ञ हो चाहे कृतघ्न (अर्थात् या तो वह ईश्वरप्रदत्त शक्तियोंका सदुपयोग कर कल्याण और नर्की के मार्ग पर चले या इनसे कार्य न लेकर पथभ्रष्ट हो जाय)।—सू० ७६ आ० २

الم نجعل له عينين و لسانا و شفتين و هديناه النجدين

क्या हमने उसे एक छोड़ दो दो आँख नहीं दी हैं (जिनसे वह देखता है), और क्या जीभ और होठ नही दिये हैं (जो

बोलने के साधन हैं)। सू० ९०, आ० ६।

و جعل لكم السمع و الابصار
و الافئدة لعلكم تشكرون

ईश्वर ने तुम्हें सुनने और देखने के लिए इन्द्रियाँ दीं, और सोचने के लिए दिल दिये (यानी बुद्धि दी), * जिसमें तुम कृतज्ञ हो (यानी ईश्वर की दी हुई शक्तियों का सदुपयोग करो)। —सू० १६, आ० ८०।

इन आयतों में और इसी तरह की अन्य आयतों में जगह जगह कई तरह की हिदायत की ओर इशारे किये गये हैं, जैसे इन्द्रियों और इन्द्रियग्राह्य पदार्थोंद्वारा हिदायत तथा बुद्धि और मननद्वारा हिदायत। किन्तु जहां कहीं मनुष्य के आत्मिक कल्याण या अकल्याण का वर्णन किया गया है वहाँ 'वही' और 'नबुव्वत' द्वारा हिदायत से ही सम्बन्ध है। जैसे—

* अरबी में 'क़ल्ब' और 'फ़ुआद' के अर्थ केवल उस अङ्ग ही के नहीं हैं जिसे हम दिल कहते हैं, बल्कि इनका उपयोग 'अक़्ल' और 'फ़िक्र' के लिए भी होता है। कुरान में जहां कहीं कान, आँख इत्यादि के साथ क़ल्ब और 'फ़ुआद' कहा गया है उससे मतलब जौहर अक़्ल (बुद्धितत्त्व) है।

ان علينا للهدى و ان لنا
للاخرة و الاولى

निस्सन्देह हमारा काम है कि हम हिदायत (पथप्रदर्शन) करें और निश्चय यह दोनो लोक (यह लोक और परलोक) हमारे ही हैं (इसलिए जो सीधी राह चलेगा उसके दोनो लोक सुधरेंगे और जो भटकेगा उसके दोनो लोक बिगड़ेंगे)। —सू० ९२, आ० १३।

و اما ثمود فهديناهم
فاستحبوا العمى على الهدى

बाकी रही समूद क़ौम, उसे भी हमने (सच्ची) राह दिखा दी थी, परन्तु उसने अन्धापन अख़्तियार किया और वह हमारी हिदायत (प्रदर्शितपथ) पर नहीं चली। (सू० ४१, आ० १६)

والذين جاهدوا فينا
لنهدينهم سبلنا و ان الله
لمع المحسنين

और जिन लोगो ने हमारी राह मे प्रयत्न और परिश्रम किया उनके लिए आवश्यक है कि हम भी अपनी राहें खोल दें। निस्सन्देह परमात्मा उन लोगों का साथी और सहायक है जो सदाचारी हैं। (सू० २९, आ० ६९)

२। एक-धर्म।

अल् हुदा

इस सिलसिले म कुरान परमात्मा की एक विशेष हिदायत का वणन करता है और उसे 'अल् हुदा के नाम से पुकारता है। ('अल् एक निदशात्मक शब्द है जिसका अर्थ 'वह या विशेष है और 'हुदा का अर्थ 'हिदायत है।)

قل ان هدي الله هو الهدي و امرنا لنسلم لرب العالمين

(ऐ पैगम्बर ! उनसे) कह दो कि निस्सन्देह परमात्मा की हिदायत ही 'अल् हुदा है (याना मनुष्य क लिए वही वास्तविक हिदायत है), और हम सब को (इस बात का) हुक्म दिया गया है कि समस्त सृष्टि के पालन कता के सम्मुख सिर झुका द। (सू० ६, आ० ७०)

و لن ترضى عنك اليهود و لا النصارى حتي تتبع ملتهم قل ان هدي الله هو الهدى

और (याद रखो) यहूदी तुमसे खुश न होंगे जब तक तुम उनके सम्प्रदाय की पैरवी न करो। यही हाल ईसाइयो का भी है।

(ऐ पैग़म्बर ! तुम उनसे कह
दो) 'अल् हुदा' (यानी सच्ची
हिदायत तो वही है जो परमात्मा
की हिदायत है (इसलिए तुम्हारी
साम्प्रदायिक दलबन्दियो की मैं
कैसे पैरवी कर सकता हूँ ? मेरी
राह तुम्हारी गढी हुई सम्प्रदायो
की राह नहीं है, बल्कि ईश्वर की
विश्वव्यापी हिदायत की राह है) ।
—सू० २, आ० १२० ।

यह 'अल् हुदा' क्या है ? कुरान कहता है कि यह ईश्वर की वह विश्वव्यापी हिदायत है जो सृष्टि के आरम्भ से दुनिया में मौजूद है और बिना भेदभाव मनुष्यमात्र क लिए है। कुरान कहता है जिस तरह परमात्मा न अन्त प्रवृत्ति, इन्द्रियाँ और बुद्धि प्रदान करन मे वंश और जाति, देश और काल का भेद नहीं रखा उसी तरह यह ईश्वराय हिदायत भी हर प्रकार के भेदभाव और पक्षपात से ऊपर है । वह सब के लिए है और सब को दी गई है, इस एक हिदायत के सिवा और जितनी हिदायतें मनुष्यो ने समझ रखी है सब मनुष्य की गढी हुई है । ईश्वर का बताया हुआ माग तो सिर्फ एक ही है । इसीलिए कुरान हिदायत के उन समस्त रूपो से सर्वथा इनकार करता है जिन्होंने मानवसमाज को इस असल से हटाकर भिन्न भिन्न

सम्प्रदायो और टोलियो मे बाट दिया है और कल्याण तथा मुक्ति की विश्वव्यापी सचाई को विशेष सम्प्रदायो और टोलियों की पैतृक सम्पत्ति बना लिया है। कुरान कहता है कि मनुष्य की बन ई हुई यह अलग अलग राहें हिदायत की राह नही हो सकती। हिदायत का राह तो वही विश्वव्यापा हिदायत की राह है। और उसी विश्वव्यापी ईश्वरनिर्दिष्ट मार्ग को कुरान 'अल् दीन' के नाम स पुकारता है जिसका अर्थ है मनुष्यमात्र के लिए सच्चा दीन। इसा का नाम कुरान के शब्दो मे 'इसलाम' है।

धार्मिक ऐक्य का तत्त्व

यह महान् तत्त्व कुरान क सन्देश का सब स पहला बुनियाद है। कुरान जा कुछ तत्त्व बतलाना और सिखाना चाहता है सब इसा पर अवलम्बित है। अगर इस तत्त्व से नजर फर ली जाय ता कुरान क सन्दश का सारा ढाचा छिन्न भिन्न हो जाता है। परन्तु ससार के इतिहास की आश्चर्य जनक प्रगति मे यह भी एक विचित्र घटना है कि कुरान न इस तत्त्व पर जितना अधिक जोर दिया था उतना ही ससार की दृष्टि इससे फिरी रही। यहाँ तक कि आज कुरान का कोई बात भी ससार की दृष्टि से इस दरजे छिपी हुइ नही है जितना कि यह महान् तत्त्व। यदि कोई व्यक्ति हर प्रकार के बाहरी प्रभाव से अलग होकर कुरान को पढ़े और उसके पृष्ठो मे स्थान स्थान पर इस महान् तत्त्व के अकाट्य और स्पष्ट एलान देखे और फिर उस ससार की ओर दृष्टि डाले जिसन

वह समझ रखा है कि कुरान भी अन्य धार्मिक सम्प्रदायों की तरह एक सम्प्रदायमात्र है तो अवश्य ही वह हैरान होकर पुकार उठेगा कि या तो मेरी निगाहें मुझे धोखा दे रही हैं और या संसार सदा बिना आखें खोले ही अपने फैसले दे दिया करता है।

इस सचाई को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है कि एक बार विस्तार के साथ यह बात साफ कर दी जाय कि जहाँ तक 'वही' और 'नबुव्वत' यानी दीन (धर्म) का सम्बन्ध हैं कुरान का आदेश क्या है और वह मनुष्य को किस मार्ग की ओर ले जाना चाहता है। सम्भव है यह विस्तार उस हद से बढ जावे जो हम 'तर्जुमानुल्कुरान' की व्याख्या के लिए नियत कर चुके हैं। किन्तु इस प्रश्न के असाधारण महत्व को देखते हुए हमे इस तरह की कड़ाई नहीं करनी चाहिए जिससे कुरान के वास्तविक उद्देश्य की बुनियादी चीजें अस्पष्ट रह जायँ। इस बारे मे कुरान ने जो कुछ कहा है उसका साराश इस प्रकार है—

कुरान कहता है कि शुरू शुरू मे मनुष्य स्वाभाविक जीवन व्यतीत करते थ, उनमे न कोई परस्पर मतभेद था और न कोई झगडे। सबकी जिन्दगी एक ही तरह की थी और सब अपनी स्वाभाविक सादगी से सन्तुष्ट थे। फिर इनकी सख्या और आवश्यकताओं के बढ़ने पर इनमे तरह तरह के मतभेद पैदा हो गये। इन मतभेदों के कारण लोग एक दूसरे से बटकर टुकडे टुकडे हो गये और अन्याय तथा झगडों की उत्पत्ति हुई। हर दल दूसरे दल से घृणा करने लगा और बलवान दुर्बलों के अधिकार हड़पने लगे।

जब ऐसी अवस्था उत्पन्न हो गइ तो यह आवश्यक हो गया कि मनुष्यजाति की हिदायत के लिए और न्याय तथा सत्य की स्थापना के लिए 'वही इलाही,' यानी ईश्वरीय ज्ञान, का प्रकाश प्रकट हो। इसीलिए यह प्रकाश प्रकट हुआ और ईश्वर की ओर से पैगम्बरो को आन ओर उनके उपदेशो का सिलसिला कायम हो गया। कुरान उन तमाम पथ प्रदर्शको को जिनके द्वारा इस हिदा-यत का सिलसिला क़ायम हुआ 'रसूल' के नाम से पुकारता है, क्योकि वे ईश्वरीय सत्ता का सन्देश (पैगाम) पहुँचानेवाले थे, और रसूल का अर्थ पैगाम पहुँचानवाला है।

وما كان الناس الا امة واحدة
فاختلفوا - ولولا كلمة سبقت
من ربك لقضي بينهم فيما فيه
يختلفون

आरम्भ मे मानवजाति का एक ही गिरोह था (लोग भिन्नभिन्न दलो के बटे हुए नही थ), फिर वे एक दूसरे स अलग अलग हो गये। यदि तुम्हारे पालन कर्त्ता न पहले से यह फैसला न कर दिया होता (कि भविष्य मे मानवसमाज मे मतभेद होगा और लोग पृथक् पृथक् मार्ग ग्रहण करेंगे) तो जिन बातो मे लोग मतभेद रखते हैं उनका निप-टारा भी इसी दुनिया मे कर

दिया गया होता। (सू० १०, आ० ३०)

كان الناس امه احده
فبعث الله النبيين مبشرين و
منذرين - و انزل معهم الكتاب
بالحق ليحكم بين الناس
فيما اختلفوا فيه

आरम्भ में सभी मनुष्य एक ही गिरोह थे (फिर उनमे मतभेद हुआ और वे एक दूसरे से पृथक हो गये), इसलिए परमात्मा ने (एक के बाद दूसरे) पैगम्बरों को उत्पन्न किया, वे (सुकर्मों के परिणाम की) खुश खबरी देते थे और (कुकर्मों के भयानक नतीजो से) लोगो को डराते थे। उनके साथ 'अल-किताब' (यानी ईश्वरीय आदेश से लिखी जाने वाली किताब) प्रकट हुई, ताकि जिन बातो मे लोगो मे मतभेद हो गया था उनमे वह किताब फैसला कर दे। (सू० २, आ० २१३)

यह हिदायत किसी खास देश, जाति, या काल के लिए ही नही बल्कि समस्त मानवसमाज के लिए थी। इसीलिए प्रत्येक युग और प्रत्येक देश मे उसका एक सा अविर्भाव हुआ। कुरान कहता है कि दुनिया का ऐसा कोई कोना नहीं जहाँ मानवजाति बसी हो और जहाँ कोई न कोई पैगम्बर ईश्वर की ओर से न हुआ हो।

وان من امة الا خلا فيها نذير

ससार की कोई कौम ऐसी नहीं है जिसमे (कुकर्मों के परिणाम से) डरानेवाला (ईश्वर का कोई पैगम्बर) न पैदा हुआ हो। (सू० ३५, आ० २५)

انما انت منذر و لكل قوم هاد

(ऐ पैगम्बर !) वास्तव मे तुम इसके सिवा और कुछ नही–केवल (कुकर्मों के परिणामो से लोगो को) डरानवाले (रसूल) हो। और दुनिया म हर क़ौम के लिए हिदायत करनवाला हुआ है। (सू० १३, आ० ९)

و لكل امة رسول فاذا جاء رسولهم قضي بينهم بالقسط و هم لا يظلمون

हर कौम के लिए एक रसूल है। इसलिए जब रसूल (अपनी सत्य की शिक्षा के साथ) प्रकट होता है तो उस क़ौम के सारे लडाई झगडो, (अन्याय और उत्पाता) का इन्साफ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है। (सू० १०, आ० ४८)

कुरान कहता है कि मनुष्यजाति के प्रारम्भिक काल मे एक के बाद दूसरे कितने ही पैग़म्बरों ने प्रकट होकर भिन्न भिन्न क़ौमों को सत्य का सन्देश सुनाया है।

و كم ارسلنا من نبي في الاولين

और कितने ही नबी हैं जिन्हें हमने पहले के लोगों (यानी प्रारम्भिक काल की क़ौमों) मे भेजा। (सू० ४३, आ० ५)

कुरान कहता है कि यह बात ईश्वरीय न्याय के विरुद्ध है कि जब तक किसी क़ौम की हिदायत के लिए उनमे कोई रसूल न भेजा गया हो तब तक वह क़ौम अपन कुकर्मों के लिए उत्तरदायी ठहराई जाय।

و ماكنا معذبين حتى نبعث رسولا

और (हमारा क़ानून यह है कि) जब तक हम एक पैग़म्बर भेजकर कर्तव्य का ज्ञान नहीं कराते तब तक कुकर्मों की सज़ा नहीं देत। (सू० १७, आ० १६)

و ماكان ربك مهلك القرى حتى يبعث في امها رسولا يتلوا عليهم اياتنا - و ماكنا مهلكي القرى الا و اهلها ظالمون

और (स्मरण रखो) तुम्हारे परमात्मा का नियम यह है कि वह कभी मनुष्यो की बस्तियो को (कुकर्मों के कारण) नष्ट नही करता जब तक कि उनमे एक

पैगम्बर न भेज दे और वह पैगम्बर ईश्वर का आदेश उन्हें पढकर न सुना दे। और हम कभी बस्तियो को नष्ट करनवाले नही हैं, मगर सिर्फ उसी हालत मे जब कि उनके रहनवालो न ज़ुल्म करना ही अपना पेशा बना लिया हो (यानी हमारे नियम के अनुसार सिर्फ वही आबादी नष्ट होती है जो अन्याय और झगडो मे डूब जाती है और ईश्वर के आदेश की अवहेलना करती है) । (सू० २८, आ० ५९)

परमात्मा के इन रसूलो और ईश्वरीय धर्म के प्रचारको मे से कुछ का वर्णन कुरान मे किया गया है और कुछ का नहीं।

ولقد ارسلنا رسلا من قبلک منهم من قصصنا علیک و منهم من لم نقصص علیک

और (ए पैगम्बर !) हमने तुमसे पहले कितने ही पैगम्बर भेजे। उनमे से कुछ ऐसे है जिनका वर्णन तुमसे किया है, और कुछ

ऐसे हैं जिनका वर्णन नहीं किया (यानी कुरान में उनका ज़िक्र नहीं किया गया है)।—सू० ४०, आ० ७८।

नूह, आद, और समूद क़ौमों के बाद कितनी ही क़ौमें हो गई हैं और उनमे कितन ही रसूल भेजे जा चुके हैं जिनका ठीक ठीक हाल परमेश्वर को ही मालूम है।

الم يأتكم نبوا الذين من قبلكم قبلكم قوم نوح و عاد و ثمود و الذين من بعدهم لايعلمهم الا الله - جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا ايديهم في افواههم

तुमसे पहल जो क़ौमे ससार मे हो चुकी हैं, क्या तुम तक उनकी ख़बर नहीं पहुँची ? नूह, आद, समूद, और वे कौमे जो उनके बाद हुई जिनकी ठीक ठीक सख्या परमश्वर ही को मालूम है, उन सब कौमो मे उनके लिए पगम्बर सत्य के प्रकाश के साथ भेजे गये। परन्तु उन कौमो न मूर्खता और उद्दण्डता से उनके उपदेशो पर ध्यान नहीं दिया। (सू० १४, आ० ९)

ससार क हर कोन मे प्रकृति के नियम ईश्वर की ओर से एक स ही हैं। वे न तो कई तरह के हो सकत हैं और न परस्पर

विरोधा हैं। इसलिए आवश्यक था कि यह हिदायत भी आरम्भ से एक सी होती और एक ही तरह पर सब मनुष्यों को मुखातिब करती। इसलिए कुरान कहता है कि ईश्वर के जितने पैगम्बर हुए हैं, चाहे वे किसी भी युग और देश मे क्यों न हुए हों, सब का मार्ग एक ही था, और सबने मानवकल्याण के लिए ईश्वर के एक ही विश्वव्यापी नियम का उपदेश दिया। कल्याण का यह विश्व व्यापी नियम क्या है ? यह नियम ईमान (विश्वास) और सत्कर्मों का नियम है, याना एक इश्वर की उपासना और नेकी का जीवन व्यतीत करना। इसके अतिरिक्त और इसके प्रतिकूल जो बातें धर्म के नाम पर कहा जाती हैं वह सच्चा धर्म नहीं है।

ولقد بعثنا فی کل امة رسولا
ان اعبدوا الله و اجتنبوا
الطاغوت

निस्सन्देह हमने दुनिया की हर कौम में एक पैगम्बर भेजा (जिसका उपदेश यह था) कि ईश्वर की उपासना करो और दुष्ट वासनाओं (यानी पाशविक वृत्तियों) के भुलावे मे न आओ। (सू० १६, आ० ३८)

و ما ارسلنا من قبلك من
رسول الا نوحی الیه انه لا اله
الا انا فاعبدون

और (ऐ पैगम्बर!) हमने तुमसे पहले कोई भी रसूल दुनिया मे ऐसा नहीं भेजा जिसको

हमने यह आदेश (वही) न दिया हो कि "मैं ही एकमात्र उपास्य देव हूँ, इसलिए मेरी ही इबादत करो"। (सू० २१, आ० २४)

कुरान कहता है कि दुनिया में कोई भी धर्मप्रवर्तक ऐसा नहीं हुआ जिसने इसी एक धर्म पर दृढ रहने और भेदभावों से बचने की शिक्षा न दी हो। सब की शिक्षा यही थी कि ईश्वर का धर्म बिछुड़े हुए मनुष्यों को जमा कर देने के लिए है। उन्हें अलग अलग कर देने के लिए नहीं। इसलिए एक ही परमात्मा की उपासना में सब एकत्र हो जायँ और भेदभाव और झगड़े के स्थान पर पारस्परिक प्रेम और एकता का मार्ग ग्रहण करें।

و ان هده امتكم امة واحدة
و انا ربكم فاتقون

और (देखो) यह तुम लोगों का सम्प्रदाय वास्तव में एक ही सम्प्रदाय है, और मैं तुम सब का परवरदिगार हूँ। इसलिए (मेरी उपासना और भक्ति की राह में तुम सब एक हो जाओ और) अवज्ञा से बचो। (सू० २३, आ० ५४)

कुरान कहता है कि परमात्मा ने तुम सब को एक समान मनुष्य का चोला दिया था, परन्तु तुमने तरह तरह के वेष और

नाम ग्रहण कर लिये, जिससे मानवजाति की एकता का सूत्र टुकड टुकडे हो गया। तुम्हारे वश अनक हैं इसलिए तुम वश के नाम पर एक दूसरे से अलग हो गये। तुम्हारे अलग अलग बहुत से देश हो गये, इसलिए भिन्न भिन्न जन्मभूमियों के नाम पर तुम एक दूसरे स लड रहे हा। तुम्हारी जातिया अगणित हैं, इसलिए हर जाति दूसरी जाति से हाथापाई कर रही है। तुम्हार रग एक से नहा हैं, यह भी पारस्परिक घृणा और द्वेष का एक बडा कारण बन गया है। तुम्हारी भाषाए भिन्न भिन्न है, यह बात भी तुम्ह एक दूसरे स प्रथक् करनवाली है। इनके अलावा, अमार गरीब, स्वामी सेवक, कुलान अकुलीन, बलवान निबल, ऊच नीच, इत्यादि, अगणित भेद उत्पन्न कर लिये गये हैं। इन सब का उद्द श्य यही है कि तुम एक दूसरे से प्रथक् हो जाओ और एक दूसर से घृणा करत रहा। एसी हालत मे बतलाओ वह कौन सा सूत्र है जा इतन भदो के हाते हुए भी मनुष्य को एक टूसर स जाड दे, और बिछुडा हुआ मानवपरिवार फिर नये सिर से बस जाय? कुरान कहता है कि सिर्फ एक ही सूत्र बाकी रह गया है, और वह ईश्वरोपासना का पवित्र सूत्र है। तुम कितन ही अलग अलग क्यो न हा गय हो, परन्तु तुम्हार लिए अलग अलग परमात्मा नहा हा सकते। तुम सब एक ही परवरदिगार के बन्दे हो, और तुम सब की बन्दना और भक्ति के लिए एक ही उपास्य देव की चौखट है। तुम अगणित भेदभाव रख कर भी एक ही उपासना की डोरी मे बंधे हुए हा। तुम्हारा कोइ भी वश क्या न

हो, तुम्हारी कोइ भी जाति क्यो न हो, तुम किसी भी दल अथवा श्रेणी के मनुष्य क्यो न हो, परन्तु जब तुम एक ही परमपिता की शरण मे जाओगे तो यह ईश्वरीय सम्बन्ध तुम्हारे समस्त पार्थिव झगडों को मिटा देगा और तुम सब के बिछड हुए हृदय परस्पर मिल जायँगे। तब तुम अनुभव करोगे कि सारा ससार तुम्हारा देश है, सारा मानवसमाज तुम्हारा परिवार है और तुम सब एक ही परमपिता की सन्तान हो।

इसलिए कुरान का उपदेश है कि ईश्वर के जितने रसूल आये सबकी शिक्षा यही थी कि 'अल-दीन' (अद्दीन) पर, अर्थात् समस्त मानवजाति के एक विश्वव्यापी धर्म पर, तुम सब दृढ रहो और इस मार्ग मे एक दूसरे से अलग न हो जाओ।

سرع لكم من الدين ما وصي
به نوحا والدى اوحينا اليك
و ما وصينا به ابراهيم و موسى
و عيسى ان اقيموا الدين
ولا تتفرقوا فيه

और (देखो) उसने तुम्हारे लिए धर्म का वही मार्ग स्थिर कर दिया है जिसकी हिदायत नूह को की गई थी और जिस पर चलन की आज्ञा इब्राहीम, मूसा, और ईसा को दी गई थी। (इन सब की परम्परागत शिक्षा यही थी कि) 'अद्दीन' यानी परमात्मा का धर्म कायम रखो

और इस राह में अलग अलग
न हो। (सू० ४२, आ० ११)

इसी आधार पर कुरान बतौर एक दलील के इस बात पर ज़ोर देता है कि यदि तुम्हे मेरी शिक्षा की सच्चाई से इनकार है तो तुम किसी भी धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ से सिद्ध कर दिखाओ कि सच्चे धर्म का मार्ग इसके सिवा कोई और भी हो सकता है। चाहे जिस धर्म की मूल शिक्षा को देखो, सब का मूलाधार तुम्हें यही मिलेगा।

قل هاتوا برهانكم هذا ذكر من معي و ذكر من قبلي بل اكثر هم لا يعلمون الحق فهم معرضون - و ما ارسلنا من قبلك من رسول الا نوحي اليه انه لا اله الا انا فاعبدون

(ऐ पैगम्बर! इनसे) कह दो अगर तुम्हें मेरी शिक्षा से इनकार है तो तुम दलील पेश करो। यह ईश्वरीय वाणी मौजूद है, जिस पर मेरे साथियों को विश्वास है, और इसी तरह की अन्य ईश्वरीय वाणियां भी मौजूद हैं जो मुझसे पहले के पैगम्बरों पर प्रकट हो चुकी हैं। (तुम सिद्ध कर दिखाओ किसी ने भी मेरी शिक्षा के विरुद्ध शिक्षा दी हो)। वास्तव में इन (सत्य से इनकार करनेवालों) में बहुधा ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें

सत्यका बिलकुल पता ही नहीं है, और इसलिए उस (सत्य) से मुह मोड हुए हैं। (ऐ पैगम्बर! विश्वास करो) हमने तुमसे पहले कोई पैगम्बर ऐसा नहीं भेजा है जिसे इस बात के सिवा कोई दूसरी बात बतलाई गई हो कि मेरे सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं, इसलिए मेरी ही उपासना करो। (सू० २१, आ० २४)

इतना ही नहीं, बल्कि कुरान कहता है किसी इश्वरीय ग्रन्थ से, किसी धर्म की शिक्षा से, किसी भी ज्ञानी वा द्रष्टा की वाणी या परम्परागत आख्यायिका से तुम सिद्ध कर दिखाओ कि मेरी शिक्षा सत्य की शिक्षा नहीं है।

ائتونی بکتاب من قبل هذا او اثارة من علم ان کنتم صادقین

अगर तुम अपने इनकार में सच्चे हो तो सबूत में ऐसा कोई ग्रन्थ पेश करो जो अब से पहले प्रकट हुआ हो, या (कम से कम) ज्ञान या तत्वदर्शन का कोई ऐसा हवाला ही दो जो

परम्परा से तुम्हे प्राप्त हुआ हो।
(सू० ४६, आ० ३)

इसी आधार पर कुरान समस्त सासारिक धर्मों के पारस्परिक समर्थन को भी बतौर एक दलील के पेश करता है, यानी वह कहता है कि इनमे से प्रत्येक शिक्षा दूसरी शिक्षा का समर्थन करती है, उसे झुठलाती नही। और जब हर शिक्षा दूसरी शिक्षा का समर्थन करती है तो इससे मालूम हुआ कि इन सारी शिक्षाओ की जड़ मे कोई एक ही सनातन और नित्य सत्य अवश्य काम कर रहा है, क्योकि यदि भिन्न देश, भिन्न काल, भिन्न जाति, भिन्न भाषा और भिन्न नाम रूप मे कही हुई बाते, इतने भेदो के रहते हुए, तत्वरूप से सदा एक ही हो और एक ही लक्ष्य पर जोर देती हो तो तुम्हें यह मान लेना पड़ेगा कि इन सब बातो की जड मे कोई एक सनातन नित्य सत्य अवश्य है।

نزل عليك الكتاب بالحق
مصدقا لما بين يديه و انزل
التوريه و الانجيل من قبل
هدى للناس

(ऐ पैगम्बर !) परमेश्वर ने यह ग्रन्थ (कुरान) जिसमे सचाई की शिक्षा है तुम पर प्रकट किया है। यह उन धर्म ग्रन्थो का समर्थन करता है जो इससे पहले प्रकट हो चुके हैं। इसी तरह लोगो के पथप्रदर्शन के लिए परमात्मा ने तौरात और

इञ्जील प्रकट की थी। (सू० ३, आ० २)

و اتیناه الانجیل فیه هدی و نور مصدقا لما بین یدیه من التوریه

हमने ईसा को इञ्जील प्रदान की, उसमें मनुष्य के लिए हिदायत और प्रकाश है, और उससे पहले जो तौरात प्रकट हो चुकी थी इञ्जील उसका समर्थन करती है, उसे झुठलाती नहीं। (सू० ५, आ० ४७)

यही कारण है कि कुरान के उपदेशों का एक बड़ा विषय कुरान से पहले की हिदायतों और रसूलों का वर्णन है। कुरान उनकी समानता, एकवाक्यता और शिक्षा की अभिन्नता से धार्मिक सच्चाई के समस्त उपदेशों को प्रमाणित करता है।

३ । धर्म और विधान ।

दीन और शरअ

अच्छा, यदि मनुष्य मात्र के लिए एक ही धम है और सब धर्मप्रवर्तकों न एक ही तत्त्व और एक ही क़ानून का उपदेश दिया है तो फिर धमा में इतनी भिन्नता कैसे हुई ? सब धर्मो मे एक ही तरह की आज्ञाएँ, एक ही तरह क कर्म एक ही प्रकार के रीति रिवाज क्या नही हुए ? किसी धर्म में उपासना की एक विधि अख्तियार की गइ है, किसी मे दूसरा। किसी के माननवाल एक ओर मुह करके उपासना करते हैं तो किसी के दूसरी ओर । किसी के यहा व्यवस्था और नियम आदि एक तरह के हैं, किसी के यहा दूसरी तरह के।

कुरान कहता है कि धर्मो की भिन्नता दा तरह की हैं। एक तो वह जिसे इन धर्मों के अनुयायियों न धर्म की वास्तविक शिक्षा से हटकर पैदा कर लिया है। यह भिन्नता धर्मों की नहीं है बल्कि उन धर्मो के माननवालों की गुमराही का नतीजा है। दूसरी भिन्नता वह है जो वास्तव मे अलग अलग धर्मा की आज्ञाओं और उनकी क्रियाओं में पाई जाती है। जैसे, एक धर्म में उपासना की कोई खास विधि स्वीकार की गई है, दूसरे म दूसरी विधि। यह भिन्नता मौलिक अथवा वास्तविक भिन्नता नहीं है, केवल ऊपरी

अर्थात् गौण भिन्नता है। और इस तरह की भिन्नता का होना अनिवार्य भी था।

कुरान कहता है कि सब धर्मों की शिक्षा मे दो तरह की बाते होती हैं। एक तो वह जो धर्मों का तत्त्व और उनका सार है, दूसरा वह जिनसे उन धर्मों का बाहरी रूप सजाया गया है। पहली मुख्य और दूसरी गौण हैं। पहली को कुरान 'धर्मतत्त्व' (दीन) और दूसरी को विधि विधान (शरअ और नुसुक) का नाम देता है। इस दूसरी चीज़ के लिए 'मिनहाज' का शब्द भी इस्तेमाल किया गया है। 'शरअ' और 'मिनहाज' का शब्दार्थ मार्ग है, और 'नुसुक' का अर्थ उपासना की विधि है। कुरान कहता है कि धर्मों मे जो कुछ भी असली भिन्नता है वह धर्मतत्त्व की नही बल्कि नियमो और विधि विधान की भिन्नता है, यानी, मूल की नहीं शाखाओ की है, असलीयत की नहीं बाहरी रूप रंग की है, आत्मा की नहीं शरीर की है। और इस भिन्नता का होना अनिवार्य था। धर्म का लक्ष्य मानवसमाज का कल्याण और उसका सुधार है, परन्तु प्रत्येक देश और प्रत्येक काल मे मनुष्यसमाज की अवस्था और परिस्थिति न तो कभी एक सी हुई है और न हो सकती है। किसी ज़माने का रहन-सहन और उसकी मानसिक शक्तियां एक खास ढङ्ग की थी और किसी ज़माने की दूसरे ढङ्ग की। किसी देश की परिस्थिति के लिए एक खास तरह का जीवन आवश्यक होता है और किसी देश के लिए दूसरी तरह का। इसलिए जिस धर्म का आविर्भाव जिस युग और जिस परिस्थिति मे हुआ और जैसी

तबीयत के मनुष्यो में हुआ उसी तरह के नियम और विधि विधान भी उस धर्म म अख्तियार कर लिये गये। जिस काल और जिस देश मे जो ढङ्ग नियत किया गया वही उस देश और काल के लिए उपयुक्त था। इसलिए हर सूरत अपनी जगह ठीक और सत्य है, और यह भेद उससे अधिक महत्त्व नही रखता जितना महत्त्व कि समस्त मानवजातियो के अलग अलग रहन-सहन और दूसरी स्वाभाविक विभिन्नताओ को दिया जा सकता है।

لكل امة جعلنا منسكا هم ناسكوه فلا ينازعنك في الامر و ادع الى ربك انك لعلى هدى مستقيم

(ए पैगम्बर!) हमने हर गिरोह के लिए उपासना की एक खास विधि नियत कर दी है जिस पर वह अमल करता है। इसलिए लोगो का चाहिए कि इस विषय म झगडा न करे। (ऐ पैगम्बर!) तुम लोगो को अपने परमात्मा की ओर बुलाओ (कि असली चीज़ यही है)। वास्तव मे तुम हिदायत के सीधे रास्ते पर चलते हो। (सू० २२, आ० ६६)

जब इस्लाम के पैगम्बर ने यरूशलम (बैतुल-मुक़द्दस) के बदले काबे की तरफ मुह करके नमाज़ पढ़नी शुरू की, तब यह

बात यहूदियों और ईसाइयों को अखरी, क्योंकि वे इन बाहरी और ऊपरी बातों पर ही धर्म का सारा दार मदार रखते थे और इन्हीं को सत्य और असत्य की कसौटी समझते थे।

लेकिन कुरान ने इस मामले को बिलकुल दूसरी ही नज़र से देखा है। कुरान कहता है तुम इस तरह की बातों को इतना महत्त्व क्यों देते हो ? यह न तो सत्य और असत्य की कसौटी ही है, और न इनका धर्म के वास्तविक अर्थात् मौलिक रूप से कोई सम्बन्ध ही है। प्रत्येक धर्म ने अपनी परिस्थिति और सुविधा के अनुसार उपासना की एक खास विधि अख्तियार कर ली और उसके अनुसार लोग बरतन लगे। परन्तु असली लक्ष्य सब का एक ही है और वह ईश्वरोपासना और सदाचरण है। इसलिए जो व्यक्ति सत्य का जिज्ञासु है उसे चाहिए कि वास्तविक लक्ष्य पर ध्यान रखे और इसी दृष्टि से सब बातो की परीक्षा करे, इन बाहरी बातो को सत्य और असत्य की कसौटी न समझ ले।

ولكل وجهة هو موليها
فاستبقوا الخيرات - اين
ما تكونوا يأت بكم الله
جميعا ان الله على كل شيء
قدير

और (देखो), हर गिरोह के लिए कोई न कोई दिशा है जिसकी ओर, उपासना करते समय, वह अपना मुह कर लेता है (इसलिए इस मामले को इतना तूल न देकर) नेकी की राह मे एक दूसरे से आगे बढ़

जान का प्रयत्न करो (क्योंकि असली काम यही है)। चाहे तुम किसी जगह भी हो ईश्वर तुम्हें ढूढ लेगा। अवश्य ही परमात्मा की शक्ति से कोई चीज बाहर नहीं है। (सू० २, आ० १४८)

फिर इसी सूरे मे आगे चलकर कुरान ने साफ शब्दो मे खुलासा कर दिया कि असली धर्म क्या है, और किन बातो से मनुष्य धार्मिक कल्याण और समृद्धि प्राप्त कर सकता है ? कुरान कहता है धर्म सिर्फ इस तरह की बातो मे नही है कि उपासना करते समय किसी व्यक्ति ने मुह पूरब की तरफ किया या पश्चिम की तरफ। वास्तविक धर्म तो ईश्वर भक्ति और सदाचरण है। फिर विस्तार के साथ बतलाया है कि ईश्वर-भक्ति और सदाचरण की असली बातें क्या क्या हैं।

ليس البر أن تولوا وجوهكم
قبل المشرق والمغرب ولكن
البر من امن بالله واليوم
الاخر والملائكة والكتاب
والنبيين - و اتى المال على
حبه ذوي القربى و اليتامى

और (देखो) नेकी यह नहीं है कि तुमने (उपासना के समय) अपना मुह पूर्व की ओर कर लिया या पश्चिम की ओर, (या इसी तरह की कोई दूसरी बात जाहिरी रस्म व रिवाज की कर

ली) । नेकी की राह तो उसकी राह है जो परमात्मा पर, आख़रत (ईश्वर के सम्मुख उपस्थित होने) के दिन पर, फ़रिश्तों पर, समस्त ईश्वरीय-ग्रन्था और सब पैगम्बरों पर ईमान (विश्वास) लाता है अपना प्यारा धन सम्बन्धियों, अनाथों, दरिद्रों, यात्रियो और मागन वालों की राह मे और गुलामो को आजाद कराने मे खर्च करता है, नमाज पढ़ता है, जकात (अपनी कमाई मे से धर्मार्थ) देता है, बात का पक्का है, भय और घबराहट तथा तगी और मुसीबत के समय धीर और अविचलित रहता है । (स्मरण रखो) ऐसे ही लोग हैं जा (अपनी दीनदारी मे) सच्चे है । और ये ही है जा बुराइयों से बचनेवाले इन्सान हैं । (सू० २, आ० १७२)

والمساكين و ابن السبيل
والسائلين و في الرقاب -
واقام الصلوة و اتى الزكوة -
والموفون بعهدهم اذا عاهدوا -
والصابرين في البأساء والضراء
و حين البأس - اولئك
الذين صدقوا - و اولئك
هم المتقون

जिस ग्रन्थ मे १३०० वर्ष से यह आयत मोजूद है, अगर ससार उसके उपदेश का वास्तविक लक्ष्य नहीं समझ सकता तो फिर कौन सा बात है जिसे ससार समझ सकता है ?

انا انزلنا التوریة فیه هدی
و نور ثم قفینا علی اثارهم
بعیسی ابن مریم و انزلنا الیک
الکتاب بالحق مصدقا لما
بین یدیه

सूरा ५ म एक विशेष क्रम से कुरान स पहले के धर्मों के उत्थान का वर्णन किया गया है। यह वर्णन हजरत मूसा और तौरात से आरम्भ होता है। फिर हजरत मसीह के जहूर (आविर्भाव) का वर्णन किया जाता है।

मसीह क बाद इस्लाम के पैगम्बर का आविर्भाव हुआ।

फिर इन भिन्न भिन्न उपदेशो के वर्णन के बाद कुरान लोगो का मुखातिब करते हुए कहता है—

لکل جعلنا منکم شرعة
و منهاجا - ولو شا الله لجعلکم
امة واحدة ولکن لیبلوکم
فی ما اتیکم فاستبقوا الخیرات

हमने तुममे स हर एक के लिए (यानी प्रत्यक धर्म के अनुयायियो के लिए) एक खास विधि विधान नियत कर दिया है। अगर परमात्मा चाहता तो (विभिन्नो

और विधानो में कोई अन्तर ही
न होता) तुम सब को एक ही
सम्प्रदाय बना देता। परन्तु यह
विभिन्नता इसलिए हुई कि (समय
और अवस्था के अनुसार) तुम्हें
जो आज्ञाएँ दी गई हैं उन्हीं में
तुम्हारी परीक्षा करे। इसलिए
इन विभिन्नताओं के पीछे न
पड़कर) नकी की राहों मे एक
दूसरे से आगे निकल जान का
प्रयत्न करो (क्योंकि असली काम
यही है)। (सू० ५, आ० ४८)

इस आयत पर एक सरसरी नजर डाल कर आगे न बढ़ जाओ, बल्कि इसके एक एक शब्द पर गौर करो। जिस समय कुरान का आविर्भाव हुआ संसार का यह हाल था कि समस्त धर्मों के अनुयायी धर्म को सिर्फ उसकी बाहरी क्रियाओ और रस्मों मे ही देखते थे और धार्मिक विश्वास का सारा जोश खरोश इसी तरह की बातो तक सीमित रह गया था। प्रत्येक धर्म के अनुयायी यही विश्वास करत थ कि दूसरे धर्मवालो को कभी मुक्ति नहीं मिल सकती, क्योकि वे देखते थ कि दूसरे धर्मवालो की क्रियाए और रस्में वैसी नहीं है जैसी कि उन्होंने स्वयं अख्तियार कर रखी हैं।

परन्तु कुरान कहता है कि नहीं, यह क्रियाएँ और रस्मे न तो धर्म की असल और हक़ीकत हैं और न उनका भेद सत्य और असत्य का भेद है। यह सब धर्म के केवल व्यावहारिक जीवन का ऊपरी ढाँचा है, तत्त्व और सार इससे उन्नतर है, और वही वास्तविक धर्म है। यह वास्तविक धर्म क्या है ?—एक परमात्मा की उपासना और सदाचरण का जीवन। यह किसी एक गिराह की पैतृक सम्पत्ति नहीं है जो उसके सिवा किसी और को न मिली हो। यह सब धर्मों मे समान रूप से मौजूद है, क्योंकि यही धर्म की असल यानी जड़ है। इसलिए न तो इसमे परिवर्तन हुआ और न किसी तरह का अन्तर ही। क्रियाए और रस्मे गौण है, देश और काल के अनुसार ये सदा बदलती रही हैं और जो कुछ भी अन्तर हुआ है इन्हीं मे हुआ है।

फिर कुरान पूछता है कि क्रियाओ और रस्मोकी इस भिन्नता को तुम इतना महत्त्व क्यों दे रहे हो ? परमात्मा ने प्रत्येक देश और प्रत्येक युग के लिए एक विशेष प्रकार की रीति नीति स्थिर कर दी, जो उसकी आवश्यकता और अवस्था के उपयुक्त थी और लोग उसी पर कारबन्द हैं। यदि परमात्मा चाहता तो समस्त मानवजाति को एक ही कौम बना देता और विचारो और क्रियाओ की कोई भिन्नता उत्पन्न ही न होने देता। किन्तु ईश्वर ने ऐसा नहीं चाहा। उसका सर्वज्ञता ने यही उचित समझा कि विचारो और क्रियाओं की भिन्न भिन्न अवस्थाएँ उत्पन्न हो। इसलिए इस भिन्नता को सत्य और असत्य की भिन्नता क्यो मान ली जाय ? क्यों इस

भिन्नता के कारण एक गिरोह दूसरे गिरोह से लड़ने के लिए तैयार रहे ? असल चीज़ जिस पर सारा ध्यान देना चाहिए नेकी के काम हैं, और समस्त ऊपरी क्रियाएँ और रस्मे इसीलिए हैं कि उनके द्वारा हम नेकी की राह पर कायम रह सकें ।

गौर करो इस आयत मे कहा गया है कि हमने तुममें से प्रत्येक धर्म के अनुयायी के लिए एक विधि विधान (शरअ और मिनहाज) ठहरा दिया है, इसम यह नही कहा गया कि एक धर्म (दीन) ठहरा दिया है। क्योंकि धर्म तो सब के लिए एक ही है धर्म एक से अधिक या कई तरह का नहीं हो सकता। हाँ, विधि विधान सब के लिए एक तरह का नहीं हो सकता। हर समय और हर देश की स्थिति और योग्यता के अनुसार विधि विधान का भिन्न भिन्न होना जरूरी था, अर्थात् विविध धर्मों की भिन्नता तात्त्विक अथवा मौलिक भिन्नता नहीं है वरन केवल बाह्य अथवा गौण चीज़ों की भिन्नता है।

यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि जहाँ भी कुरान ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि अगर परमात्मा चाहता तो सारे मनुष्य एक ही मार्ग पर एकत्र हो जाते या एक ही जाति बन जाते, जैसा कि ऊपर की आयत मे बयान किया गया है, वहाँ उन सब आयतो का मतलब इसी सत्य को स्पष्ट करना है। कुरान चाहता है यह बात लोगों के दिल मे बैठा दी जाय कि विचारों और क्रिया की भिन्नता मनुष्यस्वभाव की एक विशेषता है, और जिस तरह यह भिन्नता और सब बातों में पाई जाती है उसी तरह

धार्मिक बातों में भी मौजूद है। इसलिए इस भिन्नता को सत्य और असत्य की कसौटी नहीं समझना चाहिए। कुरान कहता है कि जब परमात्मा ने मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति, प्रत्येक जमाना, अपनी अपनी समझ, अपनी अपनी पसन्द और अपना अपना तौर तरीका रखता है, और यह सम्भव नहीं कि किसी एक छोटी से छोटी बात मे भी सब मनुष्यो का स्वभाव एक तरह का हो जाय, तो फिर यह कब सम्भव था कि धार्मिक क्रियाएँ और रस्म भिन्न भिन्न न होती, और सब एक ही ढग अख्तियार कर लेते? यहा भी भेद होना था और हुआ। किसी ने एक साधन से और किसी ने दूसरे साधन स असली लक्ष्य तक पहुँचना चाहा। परन्तु असली लक्ष्य मे, यानी ईश्वरोपासना और सदाचरण की शिक्षा मे, सभी एक मत रहे। किसा भी धम ने यह शिक्षा नहीं दी कि ईश्वर की उपासना नहीं करनी चाहिए। किसी ने भा यह नहीं सिखलाया कि झूठ बोलना सच बालन से बहतर है। इसलिए जब सब का मूल लक्ष्य एक ही है तो केवल बाहरी चीजों और क्रियाओं की विभिन्नता स क्यो कोई किसी का विरोधी और दुश्मन बन जाय? क्यो हर गिरोह दूसरे गिरोह को झुठलावे? क्यो धार्मिक सच्चाई किसी एक ही जाति या सम्प्रदाय की बपौती समझ ली जाय?

एक स्थल पर खुद पैगम्बर मुहम्मद को मुखातिब करते हुए, कुरान कहता है कि तुम जोश में आकर चाहते हो कि सब लोगो को अपने ही मार्ग पर ले आओ, परन्तु तुम्हें यह बात नहीं भूलनी

चाहिए कि विचारों और क्रियाओं की विभिन्नता मनुष्यस्वभाव की नैसर्गिक विशेषता है। तुम जबरदस्ती कोई बात किसी के गले नही उतार सकते।

ولو شاء ربک لامن من
فی الارض کلهم جمیعا -
افانت تکره الناس حتی
یکونوا مؤمنین

" और अगर तुम्हारा पालन कर्त्ता चाहता तो इस पृथ्वी पर जितने भी मनुष्य हैं सब के सब तुम्हारी बात मान लेते, (लेकिन तुम देख रहे हो कि उसके कौशल का यही निश्चय है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी अपनी समझ और अपनी अपनी राह रख)। फिर क्या तुम चाहते हो कि लोगों को मजबूर कर दो कि सब तुम्हारी ही बात माने। (सू० १०, आ० ९९)

कुरान कहता है कि मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बना है कि हर गिरोह को अपना ही तौर तरीका अच्छा दिखाई देता है, वह अपनी बातो को अपने विरोधियो की दृष्टि से नहीं देख सकता। जिस तरह तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारा ही मार्ग सर्वश्रेष्ठ है, ठीक उसी तरह दूसरो की दृष्टि में उनका अपना मार्ग सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए

इस बारे में अपने अन्दर सहिष्णुता और उदार दृष्टि पैदा करो, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।

ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير علم - كذلك زينا لكل امة عملهم - ثم الى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون

और (देखो), जो लोग परमात्मा को छोड़ कर दूसरों की उपासना करते हैं, तुम उन्हें बुरा मत कहो क्योंकि (नतीजा यह होगा कि) वे लोग भी द्वेष और नादानी से परमात्मा को भला बुरा कहने लगेंगे। (स्मरण रखो) हमने मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि प्रत्येक गिरोह को अपने ही काम अच्छे दिखलाई पड़ते हैं। फिर अन्त में सब को अपने परवरदिगार की ओर लौटना है, और वही हर गिरोह को उसके कर्मों की असलीयत बतलायेगा (सू० ६, आ० १०८)

४ । साम्प्रदायिकता ।

गिरोह परस्ती

अच्छा, जब सारे धर्मों का मुख्य लक्ष्य एक ही है और सब की बुनियाद सत्य पर है तो फिर कुरान की क्यों आवश्यकता हुई ? कुरान का उत्तर है कि यद्यपि सब धर्म सच्चे है लेकिन उन सब के अनुयायी सत्य से हट गये हैं। इसलिए यह आवश्यक हुआ कि सब को उनकी खोई हुई सचाई पर नये सिरे से कायम कर दिया जाय।

इस सम्बन्ध मे कुरान न विविध धर्मों के अनुयायियों की सारी गुमराहियाँ एक एक करके गिनाई हैं। यह गुमराहियाँ विश्वाससम्बन्धी और व्यवहारसम्बन्धी दोनो तरह की हैं। इनमे एक सबसे बडी गुमराही जिस पर जगह जगह जोर दिया गया है वह है जिसे कुरान साम्प्रदायिकता (तशय्यु) और दलबन्दी (तहज्जुब) का नाम देता है, यानी अलग अलग जत्थे और दल बना कर उनमे ऐसे भावो का पैदा कर देना जिससे लोग असली दीन यानी ईश्वरोपासना और सदाचरण को छोडकर अपने दल विशेष की पूजा और उसी के विधि विधान को अपना ध्येय मान बैठे। इसी को कुरान साम्प्रदायिकता यानी गिरोह परस्ती का नाम देता है।

ان الذين فرقوا دينهم
و كانوا شيعا لست منهم في
شي - انما امرهم الى الله
ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون

जो लोग अपने धर्म के टुकड़े टुकड़े कर अलग अलग गिरोहों मे बट गये, उनसे तुम्हें कोई वास्ता नहीं। उनका मामला खुदा के हवाले है। जैसे कुछ उनके कर्म रहे हैं उसका नतीजा खुदा उन्हें बतला देगा। (सू० ६, आ० १६०)

فتقطعوا امرهم بينهم زبرا
كل حزب بما لديهم فرحون -

फिर लोगों न एक दूसरे से पृथक् होकर अलग अलग धर्म बना लिये, हर टोली के पल्ले जो कुछ पड़ गया वह उसी मे मग्न है। (सू० २३, आ० ५४)

साम्प्रदायिकता और दलबन्दी की गुमराही से क्या मतलब है, इसे विस्तारपूर्वक समझ लेना चाहिए। कुरान कहता है, ईश्वर के बताये हुए धर्म का तत्त्व तो यह है कि वह मानवजाति पर ईश्वरोपासना और सदाचरण के मार्ग खोल दे, यानी ईश्वर के इस नियम को घोषित कर दे कि ससार की अन्य वस्तुओं की तरह मनुष्य के कर्मों के भी अलग अलग गुण और अलग अलग फल होते हैं, अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का बुरा होता है। परन्तु लोग इस सचाई को तो भूल गये और धर्म की असलीयत केवल वशों, जातियों, देशों और तरह तरह के रीति रिवाजों को ही समझ

बैठे। नतीजा यह हुआ कि अब मनुष्य की मुक्ति और उसके कल्याण का मार्ग यह नहीं समझा जाता कि उसका विश्वास या उसके कर्म कैसे है बल्कि सारा दार-मदार इस पर आ गया कि कौन किस विशेष जत्थे या समुदाय मे शामिल है और कौन नहीं है। अगर एक आदमी किसी खास मजहबी गिरोह मे शामिल है तो यह विश्वास किया जाता है कि उसे मुक्ति मिल गई और उसने धार्मिक सत्य प्राप्त कर लिया। अगर वह शामिल नहीं है तो विश्वास किया जाता है कि मुक्ति का द्वार उसके लिए बन्द है और धार्मिक सच्चाई मे उसका कोई हिस्सा नहा। मानो साम्प्रदायिकता और दलबन्दी ही धर्म की सच्चाई, अन्त समय की मुक्ति और सत्य तथा असत्य की कसौटी है। विश्वास और कर्म कोई चीज ही नही रहे। यद्यपि समस्त धर्मों का लक्ष्य एक हा है, और सब एक ही विश्वम्भर प्रभु के उपासक है तथापि प्रत्यक सम्प्रदाय का यही विश्वास है कि धर्म की सत्यता केवल उसी के पल्ले पडी है और बाक़ी सारे मनुष्य उससे वञ्चित हैं। इसलिए प्रत्येक धर्म का अनुयायी दूसरे धर्मों के विरुद्ध घृणा और पक्षपात की शिक्षा देता है और संसार मे ईश्वरोपासना और धर्म का मार्ग सर स पैर तक ईर्षा और द्वेष, घृणा और, बर्बरता हत्या और रक्तपात का मार्ग हो गया है। इस सम्बन्ध मे कुरान ने जिन महान् बातो पर जोर दिया है उनम तीन सब से स्पष्ट है।

(१) मनुष्य का कल्याण और उसकी मुक्ति उसके विश्वास और उसके कर्मा पर निर्भर है, न कि सम्प्रदायविशेष पर।

(२) मनुष्यमात्र के लिए ईश्वरीय धर्म एक ही है और एक समान सब को उसकी शिक्षा दी गई है। इसलिए धर्मों के अनुयायियों ने धर्म की एकता और उसके विश्वव्यापी तत्त्व को नष्ट कर जो बहुत से विरोधी और परस्पर लड़नेवाले जत्थे बना लिए हैं, यह साफ़ उनकी गुमराही है।

(३) धर्म की जड़ एकेश्वरवाद है, यानी एक विश्वम्भर प्रभु की सीधी उपासना।

और सब धर्मप्रवर्तकों ने इसी की शिक्षा दी है। इसके खिलाफ जितने विश्वास और कर्म स्वीकार कर लिये गये हैं, वे सब असलीयत से हट जाने के नतीजे हैं।

ऊपर की आयतों के अतिरिक्त निम्नलिखित आयतों में भी इसी तत्त्व पर ज़ोर दिया गया है।

وقالوا لن يدخل الجنة
الا من كان هودا او نصارى -
تلك امانيهم - قل هاتوا
برهانكم ان كنتم صادقين -
بلى من اسلم وجهه لله وهو
محسن فله اجره عند ربه
ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون

और यहूदियों और ईसाइयों ने कहा कि स्वर्ग में ऐसे किसी मनुष्य का प्रवेश नहीं हो सकता जो यहूदी या इसाई न हो। यह उन लोगों का केवल वहम है, (वास्तविकता यह नहीं है। ऐ पैगम्बर!) इनसे कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो बतलाओ तुम्हारी दलील क्या है? हाँ,

(निस्सन्देह मुक्ति का मार्ग खुला हुआ है, वह मार्ग किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं है। वह मार्ग तो आस्तिकता और नेक कामो का मार्ग है)। जिस किसी ने परमात्मा के आगे सर झुकाया और सदाचारी हुआ, (वह चाहे यहूदी हो या ईसाई या कोई और) वह अपने पालन हार से अपना फल पायेगा, और उसके लिए न तो किसी तरह का भय है और न कोई शोक। (सू० २, आ० १०६)

सूरा २ मे यही हक़ीकत और भी साफ शब्दो मे कही गई है।

ان الذين امنوا والذين هادوا
والنصارى والصابئين من امن
بالله و اليوم الاخر و عمل
صالحا فلهم اجرهم عند ربهم
ولا خوف عليهم ولا هم
يحزنون -

जो लोग (पैगम्बर पर) ईमान लाये है चाहे वे हो, या वे लोग हों जो यहूदी या ईसाई या साबी हैं, कोई भी क्यों न हो, (और किसी भी सम्प्रदाय से क्यों न हो, परमात्मा का क़ानून मुक्ति

के लिए यह है कि) जो भी परमात्मा पर और ईश्वरीय न्याय (यानी क़ियामत) पर ईमान लाया, और जिसके कर्म अच्छे हुए, वह अपने विश्वास और कर्मों का फल अपने पालनहार प्रभु से अवश्य पायगा। उसके लिए न तो किसी तरह का खटका है, न किसी तरह का शोक। (सू० २, आ० ५९)

यानी धर्म का लक्ष्य तो ईश्वरोपासना और नेक काम थे, धर्म किसी सम्प्रदायविशेष का नाम नहीं था। कोई भी मनुष्य चाहे वह किसी वंश या जाति का क्यों न हो, और किसी भी नाम से पुकारा जाता हो, अगर वह ईश्वरनिष्ठ और सदाचारी है तो वह ईश्वरीय पथ का पथिक है और उसे मुक्ति प्राप्त होगी। लेकिन यहूदियों और ईसाइयों ने इसके विरुद्ध अपनी अपनी पैतृक और साम्प्रदायिक गिरोहबन्दियों के कानून बना लिये। यहूदियों ने साम्प्रदायिकता का एक दायरा बनाया और उसका नाम यहूदी-मत रखा। जो इस दायरे के अन्दर है वह सत्य पर है और उसके लिए मुक्ति भी है। जो इसके बाहर है वह असत्य पर है और उसे कभी मुक्ति नहीं मिल सकती। इसी तरह ईसाइयों ने भी अपना एक

दायरा बना कर उसका नाम ईसाई-मत रख लिया। जो इसमे दाखिल है केवल वही सचाई पर है और केवल उसी के लिए मुक्ति है, और जो उसके बाहर है न उसका सत्य मे कोई हिस्सा है, और न वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है। अब रहे मनुष्य के कर्म सो उनका नितान्त काई मूल्य ही नहीं रहा। चाहे कोई व्यक्ति कितना ही ईश्वरनिष्ठ और सदाचारी क्यों न हो, पर यदि वह यहूदियों की पैतृक गिरोहबन्दी या ईसाइयों की साम्प्रदायिक गिरोहबन्दी में दाखिल नहीं है तो कोई भी यहूदी अथवा ईसाई उसे सत्पथ का अनुगामी नहीं मान सकता। इसके विपरीत यदि बुरे से बुरे कर्मों का करनेवाला भी इनमें से किसी सम्प्रदाय मे शामिल है तो उसके सम्प्रदायवाले उसे मुक्ति का अधिकारी समझते हैं। यहूदियों और ईसाइयो के इसी विश्वास को कुरान इन शब्दों मे प्रकट करता है—"कूनू हूदन औ नसारा तहतदू," यानी इन लोगों के अनुसार इश्वरनिष्ठा और अच्छे कर्मों की राह ईश्वरप्रदर्शित राह नहीं है, बल्कि यहूदी और ईसाइ सम्प्रदाएं ही ईश्वरप्रदर्शित राहें है। जब तक कोई व्यक्ति यहूदी अथवा ईसाई न हो जाय तब तक वह सत्पथ का गामी नहीं हो सकता। फिर कुरान इस विचार का खण्डन करते हुए कहता है—परमात्मा की हिदायत जो ससार का एक सर्वव्यापी नियम है, भला इन लोगो की अपनी गढी हुई गिरोहबन्दियो मे क्योकर परिमित हो सकती है? "बला, मन अस्लम वजहहू लिल्लाहे व होव मुहसिन।" इस वाक्य के जोर और उसकी व्यापकता पर ध्यान दो। कोई भी व्यक्ति, किसी भी वश, जाति या सम्प्रदाय

का क्यों न हो यदि उसने परमात्मा के सम्मुख भक्तिभाव से सर झुकाया और सदाचार का जीवन व्यतीत करना अंगीकार कर लिया, तो उसने मुक्ति और कल्याण प्राप्त कर लिया, उसके लिए कोई खटका अथवा गम नहीं है।

धार्मिक सच्चाई की व्यापकता का इससे ज्यादा साफ और सार्वभौमिक एलान और क्या हो सकता है ?

وقالت اليهود ليست النصارى
على شي و قالت النصارى
ليست اليهود على شي و
هم يتلون الكتاب كذلك
قال الذين لا يعلمون مثل
قولهم - فالله يحكم بينهم
يوم القيامة فيما كانوا فيه
يختلفون

और यहूदियों ने कहा कि ईसाइयों का धर्म कुछ नहीं है। इसी तरह ईसाइयों ने कहा कि यहूदियों के पास क्या धरा है ? हालांकि दोनों ईश्वरीय ग्रन्थ पढ़ते हैं। और दोनों के धर्म का उद्गमस्थान एक ही है। ठीक ऐसी ही बात वे लोग करते हैं जो धर्मग्रन्थों का ज्ञान नहीं रखते (यानी अरब के प्राचीन धर्मावलम्बी जो यहूदियों और ईसाइयों की तरह केवल अपने ही को मुक्ति का पैतृक अधिकारी समझते थे)। अच्छा, जिस बात को लेकर यह परस्पर झगड़ रहे

हैं अन्तिम न्याय के दिन पर-
मेश्वर उसका फैसला कर देगा
(और उसी समय हक़ीक़त सब
पर प्रकट हो जायगी)।—सू०
२, आ० ११३।

अर्थात् यद्यपि परमात्मा का बताया हुआ धर्म एक ही है और एक ही इश्वरीय ग्रन्थ यानी तौरात दोनों के सामने मौजूद है, फिर भी इस धार्मिक गिरोहबन्दी का परिणाम यह हुआ कि दो परस्पर विरोधी और एक दूसरे को झूठा कहनेवाले जत्थे क़ायम हो गये। प्रत्येक जत्था दूसरे जत्थे को झुठला रहा है और हर जत्था सिर्फ़ अपने को ही मुक्ति और कल्याण का ठेकेदार समझता है।

प्रश्न यह है कि जब धर्म एक होने के स्थान पर अगणित जत्थों और सम्प्रदायों मे बंट गया और हर जत्था केवल अपने ही को सच्चा और बाक़ी सब को झूठा बतलाने लगा तो अब इस बात का फैसला कैसे हो कि वास्तव मे सत्य कहाँ है? कुरान कहता है कि वास्तविक सत्य तो सब के पास है किन्तु व्यवहार में सब ने उसे खो रखा है। सब को एक ही धर्म की शिक्षा दी गई थी और सब के लिए एक ही विश्वव्यापी हिदायत थी, लेकिन सब ने वास्तविक तत्त्व को नष्ट कर दिया और ईश्वरीय पथ पर मिल जुल कर रहने के स्थान पर अलग अलग गिरोहबन्दियां कर लीं। अब

प्रत्येक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से लड रहा है और समझता है कि मुक्ति और कल्याण मेरी ही पैतृक सम्पत्ति है, दूसरो का इसमें कोइ हिस्सा नहीं।

सूरा २ मे ऊपर की आयत क बाद ही निम्नलिखित बयान आता है—

و ں اطلم ممں ملع
مساحد الله اں ںدکر فيها
اسمه و سعی فی حرابها -
اولئک ما کاں لهم يدحلوها
الا حاںٔفيں - لهم فی الدںيا
حزي و لهم فی الاحرة عداب
عطيم

और (गौर करो), उससे बढ कर अन्यायी और कौन हो सकता है जो परमात्मा के उपासना-मन्दिरो मे किसी को परमात्मा के स्मरण और कीर्त्तन करन स रोके अथवा उन मन्दिरों के नष्ट करन का प्रयत्न करे ? जो लोग एसे जुल्म और उपद्रव करते हैं, वे वास्तव मे इस योग्य नहीं हैं कि परमात्मा के मन्दिरों म पैर भी रखे (वे तभी उन मन्दिरो म प्रवेश कर सकते हैं जब दूसरो को डरान के स्थान पर वे स्वय दूसरो से डरें और अन्याय तथा उपद्रव करन का साहस उनमे न रह)। स्मरण

रखो, ऐसे आदमियों को इस
लोक में अपकीर्ति और परलोक
मे महान् यंत्रणा भोगनी होगी।
(सू० २, आ० ११४)

यानी, विविध धर्मों की इस गिरोहबन्दी का परिणाम यह हुआ कि परमात्मा के उपासना-मन्दिर तक अलग अलग हो गये। यद्यपि सब धर्मों के अनुयायी एक ही परमात्मा के माननेवाले हैं, तथापि यह सम्भव नहीं कि एक धर्म का अनुयायी दूसरे धर्मवालों के बनाये हुए उपासना मन्दिर मे जाकर परमात्मा का नाम ले सके। इतना ही नहीं, बल्कि प्रत्येक सम्प्रदाय के लोग केवल अपने ही उपासना-मन्दिर को ईश्वर की उपासना का स्थान समझते हैं और दूसरे सम्प्रदायों के उपासना गृहो का उनकी नजरो मे कोई आदर ही नही। यहाँ तक कि लोग कभी कभी धर्म के नाम पर उठकर दूसरों के उपासना-ग्रहो को नष्ट भ्रष्ट तक कर डालते है। कुरान कहता है इसस बढ कर अन्याय मनुष्य और क्या कर सकता है कि खुदा के बन्दों को उसकी पूजा करने से रोके। और केवल इसलिए रोके कि वे किसी दूसरे सम्प्रदाय मे शामिल हैं, या किसी उपासना-गृह को केवल इसलिए गिरा दे कि वह हमारा नहीं बल्कि दूसरे सम्प्रदाय-वालों का बनवाया हुआ है। क्या तुम्हारे गढे हुए सम्प्रदायों की भिन्नता से परमात्मा भी भिन्न भिन्न हो गया? क्या एक सम्प्रदाय का बनवाया हुआ उपासना-ग्रह परमात्मा का उपासना-मन्दिर है,

और दूसरो का बनवाया हुआ उपासना गृह परमात्मा का उपासना मन्दिर नहीं है ?

و لا تومنوا الا لمن تبع دينكم
قل ان الهدى هدي الله ان
يوتى احد مثل ما اوتيتم
او يحاجوكم عند ربكم -
قل ان الفضل بيد الله -
يؤتيه من يشا - والله
واسع عليم

और (यहूदी लोग आपस म एक दूसरे से कहते है कि) सिवा उनके जो तुम्हारे दीन की पैरवा करते हैं और किसी की बात न मानो। (ऐ पैगम्बर !) उनसे कह दो कि परमात्मा की हिदायत ही असली हिदायत है (और वह सब के लिए एक समान खुली है, किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए ही नहीं), और वह (यहूदी लोग) एक दूसरे से कहते हैं कि यह बात कभी न मानो कि जो धार्मिक सत्य तुम्हे दिया जा चुका है वह अब किसी दूसरे को भी मिल सकता है, या परमात्मा के सामने यहूदियो के विरुद्ध किसी दूसरे की कोई बात चल सकेगी। (ऐ पैगम्बर !) तुम इनसे कह दो कि परमात्मा

का देन और उसके प्रसाद का भण्डार तुम्हारे हाथों में नहीं है, वह उसी के हाथों में है। वह चाहे जिसे दे। वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। (सू० ३, आ० ७४)

यानी, यहूदियों का विश्वास यह है कि धर्म की जो हिदायत इश्वर न उन्हें दी है वह केवल उन्हीं को दी है, सम्भव नहीं कि वह हिदायत किसी दूसरे व्यक्ति या जाति को प्राप्त हो सके। इस लिए वे कहते हैं कि अपनी सम्प्रदाय के लोगों के सिवा और किसी की भी सच्चाई या श्रेष्ठता को स्वीकार न करो, और न यह मानो कि परमात्मा के सामने तुम्हारे (यहूदियों के) विरुद्ध किसी भी आदमी की दलील चल सकती है। कुरान इस झूठे गुमान का खण्डन करता है और कहता है "इन्नल हुदा हुदल्लाह," यानी परमात्मा की हिदायत ही असली हिदायत है। उस प्रभु की कृपा किसी एक व्यक्ति या समुदाय के लिए ही नहीं बल्कि सब के लिए है। इसलिए जो भी व्यक्ति इश्वर की हिदायत की हुई राह पर चलेगा वह सत्य का अनुयायी समझा जायगा, चाहे वह यहूदी हो चाहे कोई और।

यहूदियों में साम्प्रदायिक गर्व इतना बढ़ गया था कि वे कहते थे कि परमात्मा ने दोज़ख की आग हम पर हराम कर दी है, और अगर हममें से कोई नरक में डाला भी जायगा तो इसलिए नहीं

कि उसपर ईश्वर का कोप है बल्कि इसलिए कि अपने गुनाहों के दाग धब्बों से पाक साफ होकर वह फिर जन्नत मे दाखिल हो।

कुरान इनके इस झूठे गुमान को जगह जगह बयान करता है और उसका खण्डन करते हुए पूछता है कि यह बात तुम्हें कहाँ से मालूम हुइ कि यहूदी-सम्प्रदाय का प्रत्येक व्यक्ति मुक्तिप्राप्त है और उसे परलोक की यंत्रणा से छुटकारा मिल चुका है? क्या तुम्हें परमात्मा ने बिना शर्त के मुक्ति का पट्टा लिख कर दे दिया है, कि जहा कोई व्यक्ति यहूदी हुआ दोजख की आग उस पर हराम हो गई? अगर नही दिया तो फिर बतलाओ ऐसा विश्वास करना परमात्मा के नाम पर झूठ गढना नहीं तो और क्या है? इसके बाद कुरान परमात्मा के बनाये हुए इस नियम का एलान करता है कि "जिस किसी न भी अपने कर्मों से बुराई कमाई उसका फल बुरा है, और जिस किसी न भी भलाई कमाइ उसका फल अच्छा है।" जिस तरह संखिया खाने से खानेवाला मर जाता है, चाहे यहूदी हो या गैर यहूदी, और दूध पीने से स्वस्थ और पुष्ट होता है चाहे पीनेवाला किसी भी वंश, जाति या सम्प्रदाय का क्यों न हो, इसी तरह अन्तर्जगत मे भी प्रत्येक कर्म का एक गुण विशेष है जो कर्म करनेवाले के जन्म, जाति या सम्प्रदायविशेष के कारण बदल नहीं सकता। सू० २ में लिखा है—

و قالوا لن تمسنا النار الا
اياما معدودة قل اتخذتم

और ये लोग (यहूदी) कहते हैं कि नरक की आग हमें कभी

عند الله عهدا فلن يخلف
الله عهده أم تقولون على الله
ما لا تعلمون - بلى من كسب
سيئة و احاطت به خطيئته -
فاولئك اصحاب النار هم
فيها خالدون - والذين
امنوا و عملوا الصالحات
اولئك اصحاب الجنة هم
فيها خالدون

नहीं छूयेगी, और अगर छूयेगी भी तो केवल कुछ दिनों के लिए। (ऐ पैगम्बर !) इनसे कहो कि तुम जो यह कहते हो तो क्या परमात्मा से तुमने कोई प्रतिज्ञा करा ली है कि अब वह उस प्रतिज्ञा से फिर नहीं सकता ? या तुम परमात्मा के नाम से एक ऐसी झूठी बात कह रहे हो जिसका तुमको कोई ज्ञान नहीं ? नहीं, (परमात्मा का नियम तो यह है कि कोइ किसी भी वश या जाति का व्यक्ति क्यों न हो) जिस किसी ने भी बुराई कमाई और जो पापा से घिर गया, वह नारकी अर्थात् सदा नरक मे रहनेवाला है, और जिस किसी न भी ईमान (विश्वास) का मार्ग ग्रहण किया और जो सदाचारी हुआ वह बहिश्ती है और सदा बहिश्त (स्वर्ग) मे रहनवाला है। (सू० २, आ० ७४, ७५)

सूरा ४ मे सिर्फ यहूदियो और ईसाइयों को ही नहीं, बल्कि सब को सबोधन करत हुए, साफ साफ एलान किया गया है जिसे जान लेने के बाद किसी प्रकार के भी सन्देह या भ्रम की गुञ्जाइश नहीं रहती।

ليس باماىيكم ولا امانى
اهل الكتاب - من يعمل
سو يجز به و لا يجد له من
دون الله وليا و لا نصيرا

(मुसलमानो ! याद रखो, मुक्ति और कल्याण) न तो तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है और न अन्य ईश्वरीय ग्रन्थ रखने वालोकी इच्छा पर ही। (इश्वरीय नियम तो यह है कि) जो कोई भी बुराइ करेगा उसका फल उसे भोगना हागा। उस समय न तो किसी की मित्रता ही उसे ईश्वरीय कोप म बचा सकेगी और न किसी की सहायता (सू० ४, आ० १२३)

इन धार्मिक दलबन्दिया ही के परिणामरूप यहूदी समझते थे कि सच्चाई और इमानदारी की जो कुछ भी आज्ञाए ईश्वर ने दी हैं वह इसलिए नही हैं कि सब मनुष्यो के साथ सच्चाई और ईमानदारी का व्यवहार किया जाय, बल्कि केवल इसलिए हैं कि एक

यहूदी दूसरे यहूदी के साथ बुराई न करे। वे कहते थे कि अगर कोई व्यक्ति हमारा सहधर्मी नही है ता हमारे लिए उचित है कि हम जिस तरह भी चाहें उससे फायदा उठाय, सच्चाई और ईमानदारी के नियमो का ध्यान म रखन की हमे कोई आवश्यकता नही। इसलिए व्यापार मे सूद लेने की मनाइ उन्होंने सिर्फ अपने ही सहधर्मियो तक परिमित कर दी थी, और आज तक उनका यही व्यवहार चला आता है। वे कहते है कि एक यहूदी को दूसरे यहूदी से सूद नही लेना चाहिए। लेकिन एक यहूदी अगर किसी गैर यहूदी से सूद ले तो कोई हरज नहीं। कुरान उनके इस विश्वास का जिक्र करत हुए उसे उनका एक बहुत बडा भ्रम करार देता है।

و اخذهم الربوا و قد نهوا
عنه و اكلهم اموال الناس
بالباطل

उनका (यहूदियो का) सूद खाना, हालाकि वे इससे रोक दिये गये थ, और उनकी यह बात कि लोगो का माल अनुचित उपायों से खा लेत थे। (सू० ४, आ० ५९)

इसी तरह जो यहूदी अरब मे निवास करते थे, वे कहते थ कि अरब के अशिक्षित निवासियो के साथ व्यवहार करने मे हमे दियानतदारी और सच्चाई की कोई आवश्यकता नहीं, ये लोग मूर्तिपूजक है, हम इन लोगो का धन जिस तरह भी खा लें हमारे लिए जायज है।

ذلك بأنهم قالوا ليس علينا في الأميين سبيل ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون بلى من أوفى بعهده واتقى فإن الله يحب المتقين

(यहूदियो की) इस बेई-मानी का कारण यह है कि वे कहते हैं कि (अरब के इन) अशिक्षित लोगो के साथ (बेई मानी करने मे) हमसे कोई पूछ ताछ नहीं होगा (जिस तरह भी हम चाहे इनका माल खा ले सकते है, हालाकि) एसी बात कह कर वे साफ परमात्मा के नाम पर झूठ गढते हैं । वे जानते हैं कि इश्वरीय धर्म की यह आज्ञा नहीं हो सकती । हा, (इनस पूछा जायगा और अवश्य पूछा जायगा, क्योंकि परमात्मा का नियम तो यह है कि) जा कोई अपने वचन को सचाई स पूरा करता है और बुराई से बचता है, वही परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करता है, और परमात्मा बुराई से बचनवालों से प्रेम करता है । (सू० ३, आ० ७०)

यानी, ऐसा विश्वास रखना परमात्मा के धर्म पर प्रत्यक्ष झूठ थोपना है। ईश्वर का बताया हुआ धर्म तो यह है कि हर एक व्यक्ति के साथ नकी करनी चाहिए, और हर अवस्था में सच्चाई और दियानतदारी से काम लेना चाहिए, चाहे कोई भी व्यक्ति हो और किसी भी धर्म या सम्प्रदाय का क्यों न हो, क्योंकि सफेद हर हाल मे सफेद है और काला हर हाल में काला है। कोई सफेद वस्तु इसलिए काली नही हो सकती कि वह किसी विशेष आदमी को दी गई है, और कोइ काली चीज़ इसलिए सफेद नहीं हो जा सकती कि वह किसी जाति अथवा सम्प्रदायविशेष के हाथ से निकली है। इसलिए दियानतदारी हर हाल मे दियानतदारी है और बद-दियानती हर हालत मे बद-दियानती है।

कुरान के आविभाव के समय अरब में तीन बडे बडे मज़हबी गिरोह थे, यहूदी, इसाई, और अरब के मूर्तिपूजक। और ये तीनो हज़रत इब्राहीम को एक समान प्रतिष्ठा और आदर की दृष्टि से देखते थ, क्योकि तीनो सम्प्रदायवालो के आदिपुरुष इब्राहीम ही थ। इसलिए कुरान इन धार्मिक गिरोहबन्दियों की गुमराही को स्पष्ट करने के लिए एक निहायत सीधा सादा प्रश्न इन तीनो के सामने रखता है। वह कहता है कि यदि दीन की सच्चाई सम्प्रदायविशेष पर ही निर्भर है तो बतलाओ हज़रत इब्राहीम किस सम्प्रदाय के थे? उस समय तक न तो यहूदी-मत का आविर्भाव हुआ था और न इसाई-मत का, और न उस समय तक किसी और ही सम्प्रदाय का अस्तित्व था? फिर यदि हज़रत इब्राहीम

किसी भी सम्प्रदायविशेष के न होने पर भी सच्चे धर्म के मार्ग पर थे, तो बतलाओ वह मार्ग कौन सा था ? कुरान कहता है कि वह उसी सच्चे धर्म का मार्ग था जो तुम्हारी अपनी गढी हुई दल बन्दियों से उच्चतर और अखिल मानवजाति के लिए एक समान मुक्ति का मार्ग है—यानी एक ही परमेश्वर की सीधी सादी उपासना और सदाचार की जिन्दगी।

و قالوا كونوا هودا او نصارى تهتدوا قل بل ملة ابراهيم حنيفا وما كان من المشركين

और यहूदी कहते है, यहूदी हो जाओ, हिदायत पाओगे। ईसाई कहते हैं, ईसाई हो जाओ, हिदायत पाओगे। (ऐ पैगम्बर !) तुम कह दो, नहीं, (परमात्मा का विश्वव्यापी हिदायत तुम्हारी इन गिरोहबन्दियों में नहीं जकडी जा सकती), हिदायत का रास्ता तो वही सीधा रास्ता है जो इब्राहीम का था और निःसन्देह इब्राहीम मुशरिक* न था। (सू० २, आ० १२९)

* जो एक ईश्वर को छोड कर किसी दूसरे की पूजा करे।

يا اهل الكتاب لم تحاجون فى ابراهيم و ما انزلت التوريه و الانجيل الا من بعده - افلا تعقلون

ऐ धर्मग्रन्थों के मानने-वालो ! तुम इब्राहीम के बारे मे क्यों बहस करते हो जब कि यह बात बिलकुल साफ़ है कि तौरात और इञ्जील इब्राहीम के बहुत बाद उतरीं ? क्या ऐसी मोटी बात समझने की बुद्धि भी तुममे नहीं है ? (सू० ३, आ० ५८)

यानी, क़ुरान यहूदियों और ईसाइयों से सवाल करता है कि तुम्हारी यह गिरोहबन्दियां ज्यादा से ज्यादा तौरात और इञ्जील के समय से शुरू होती हैं, तो फिर बतलाओ तौरात से पहले भी ऐसे आदमी मौजूद थे या नहीं जिनको ईश्वर से हिदायत मिली हो ? अगर थे, तो उनका मार्ग क्या था ? स्वयं तुम्हारे वंश के, यानी इसराईल वंश के, तमाम पैग़म्बरो का मार्ग क्या था ? हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटो और पोतों को जिस धर्म की शिक्षा दी थी वह धर्म कौन सा था ? हज़रत याक़ूब मृत्यु शय्या पर जब अपने बेटो को ईश्वरीय धर्म पर दृढ़ रहने का अन्तिम उपदेश दे रहे थे, तो वह धर्म कौन सा था ? ज़ाहिर है कि वह यहूदी-मत या ईसाई-मत की गिरोहबन्दी नहीं हो सकती, क्योंकि ये दोनो गिरोहबन्दियां हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के

नाम पर की गई हैं, और ये दोनो हज़रत इब्राहीम और हज़रत याक़ूब से कइ सौ वर्ष बाद पैदा हुए। इसलिए सिद्ध हुआ कि इन तुम्हारे गढे हुए दायरो से परे भी मुक्ति का कोई उत्तर मार्ग मौजूद है, जो उस समय भी मानवसमाज के सामने था जब कि तुम्हारे इन सम्प्रदायो का नाम निशान तक न था। कुरान कहता है कि यही मार्ग धर्म का वास्तविक मार्ग है, और इसे प्राप्त करने के लिए किसी गिरोहबन्दी की आवश्यकता नहीं, बल्कि आवश्यकता है विश्वास और सदाचरण की।

ام كنتم سهداء اد حصر
يعقوب الموت اد قال
لبنيه ما تعبدون من بعدي و
قالوا نعبد الهک و اله اباک
ابراهيم و اسمعيل و اسحاق
الها واحدا و نحن له مسلمون

फिर क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब के सिरहाने मृत्यु खडी थी और उसने अपनी सन्तान से पूछा था कि बतलाओ मेरे बाद तुम किसकी उपासना करोगे, उन्होने उत्तर दिया था कि हम उसी एक ईश्वर की उपासना करगे जिसकी तुम और तुम्हारे पूर्वजों, इब्राहीम, इस्माईल, और इसहाक ने की है, और हम परमात्मा के आज्ञाकारी रहेंगे ? (सू० २, आ० १२७)

कुरान कहता है ईश्वरीय धर्म की जड़ यही है कि मनुष्यमात्र परस्पर भाई और सब एक हैं। उसकी जड़ भेद और घृणा नहीं है। खुदा के जितने भी रसूल दुनिया में आये सब ने यही शिक्षा दी कि तुम सब बुनियादी तौर पर एक ही गिरोह और एक ही जाति हो, और तुम सब का पालनहार भी एक ही है। इसलिए उचित है कि सब उसी एक परवरदिगार की बन्दगी करें, और एक घरान के भाई-बन्दों की तरह मिल जुल कर रहें। यद्यपि प्रत्येक धर्म के संस्थापक ने इसी मार्ग का उपदेश दिया था, तथापि हर धर्म के अनुयायी इस मार्ग से हट गये। परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, और प्रत्येक वश ने अपना अलग अलग जत्था बना लिया और प्रत्येक जत्था अपने ही तौर तरीक़ों मे मग्न हो गया।

कुरान ने पिछले पैगम्बरो और धर्म प्रवर्तको में से जिनके उपदेश उद्धृत किये है उन सब के सिद्धान्तो का मुख्य तत्त्व भी यही है, और प्राय अधिकाश के उपदेशो का अन्त धर्म की एकता और मनुष्य के विश्व-भ्रातृत्व पर ही होता है।

जैसे, सूरा २३ में सब से पहले हज़रत नूह के उपदेशो का वर्णन आता है।

ولعد ارسلنا نوحا الى
قومه فقال يا قوم اعبدوا الله
ما لكم من اله غيره - افلا
تتقون - (۲۳ ۲۳)

इसके बाद उन रसूलों के उपदेशों की तरफ़ इशारा किया

ثم انشانا من بعده قرنا
اخرين فارسلنا فيهم رسولا

गया है जो हजरत नूह के बाद हुए।

منهم ان اعبدوا الله ما لكم
من اله غيره (٣٢)

फिर हजरत मूसा का जिक्र है।

ثم ارسلنا موسى و اخاه
هارون (٣٧)

हजरत मूसा के बाद हजरत ईसा के उपदेश आते हैं।

و جعلنا ابن مريم و امه
اية (٥٢)

अन्त मे इन सब का जिक्र करने के बाद निम्नलिखित सच्चाई का एलान किया गया है—

और हमने सब पैगम्बरों को यही आज्ञा दी थी कि पाक और साफ चीजे खाओ और सदा चार का जीवन व्यतीत करो। तुम जो कुछ भी करत हो उससे मैं बेखबर नहीं हूँ। और (देखो) यह तुम्हारा गिरोह वास्तव मे एक ही गिरोह है, और मै तुम सब का पालनहार हूँ। (इस लिए अलग न हो, और) अवज्ञा से बचो। लेकिन फिर ऐसा हुआ कि लोगों ने एक दूसरे से कट कर अलग

يا ايها الرسل كلوا من
الطيبات و اعملوا صالحا -
اني بما تعملون عليم - و ان
هذه امتكم امة واحدة و
انا ربكم فاتقون - فتقطعوا
امرهم بينهم زبرا - كل حزب
بما لديهم فرحون

अलग धर्म बना लिए, हर टोली
के पल्ले जो कुछ पड गया वह
उसी मे मग्न है। (सू० २३,
आ० ५३)

यानी, एक के बाद दूसरे सब पैगम्बरों न यही शिक्षा दी थी कि ईश्वर की बन्दगी करो और सदाचरण का जीवन व्यतीत करो। परमात्मा के सम्मुख तुम सब एक ही गिरोह और एक ही सम्प्रदाय हो। तुम सब का एक ही पालनहार है। तुममे से कोई गिरोह दूसरे गिरोह को अपने से अलग न समझे और न कोई गिरोह दूसरे गिरोह का विरोधी हो। فتقطعوا امرهم بينهم زبرا लकिन लोगो ने इस शिक्षा को भुला दिया। अपनी अपनी अलग अलग टोलिया बना ली كل حزب بما لديهم فرحون हर टोली उसी मे मग्न है जो उसके पल्ले पड गया है।

धार्मिक गिरोहबन्दी के रीति रिवाजो मे से एक रस्म वह है जिसे इसाई-मत ने अख्तियार कर लिया और जिसे वह बप्तिस्मे के नाम से पुकारता है। वास्तव मे यह एक यहूदी रस्म थी जो पापो का प्रायश्चित्त करते समय अदा की जाती थी। इसलिए उसका मूल्य एक मामूली रस्म के मूल्य से अधिक नहीं है। लेकिन ईसाइयो ने इसे मुक्ति और कल्याण की बुनियाद समझ ली है। जब तक कोई मनुष्य हजरत ईसा मसीह के नाम पर बप्तिस्मा न ले तब तक वह नेक और धार्मिक नही समझा जा सकता है, और न अन्त में

उसे मुक्ति ही प्राप्त हो सकती है। कुरान कहता है, यह कैसी गुम-राही है कि मनुष्यों की मुक्ति और उनका कल्याण जिनका दार मदार सिर्फ उनके कर्मों पर है एक विधिविशेष के साथ आबद्ध कर दिया जाय ! यह मनुष्य का ठहराया हुआ 'बप्तिस्मा' परमात्मा का बप्तिस्मा नहीं है। परमात्मा का बप्तिस्मा तो यह है कि तुम्हारे दिल इश्वरनिष्ठा के रङ्ग मे में रङ्ग जायँ।

صبغة الله و من احسن
من الله صبغة و نحن له
عابدون

यह परमात्मा का रङ्ग है (यानी ईश्वरीय धर्म का स्वाभाविक 'बप्तिस्मा' है) और रंगने मे परमात्मा से अच्छा और कौन हो सकता है ? हम तो उसी की बन्दगी करनेवाले हैं। (सू० २, आ० १३८)

सूरा २ मे जगह जगह यह भी कहा गया है कि ईश्वरीय धर्म का मार्ग कर्ममार्ग है, और प्रत्येक मनुष्य के लिए वही होता है जो उसके कर्मों की कमाई है। किसी मनुष्य की मुक्ति या उसके कल्याण मे इस बात से कोई सहायता नहीं मिल सकती कि उसके गिरोह मे बहुत से पैगम्बर या महान् पुरुष हो चुके हैं या वह नेक मनुष्यो के वश से है या किसी पिछली क़ौम के साथ उसका पुराना सम्बन्ध है।

تلك امة قد خلت لها ما كسبت و لكم ما كسبتم و لا تسئلون عما كانوا يعملون

यह एक क़ौम थी जो गुज़र चुकी। उसके लिए वह था जो उसने अपने कर्मों से कमाया, और तुम्हारे लिए वह है जो तुम अपने कर्मों से कमाओ। उनके कर्मों के लिए तुमसे कोई पूछ-ताछ नहीं होगी। (सू० २, आ० १२८)

५ । कुरान का उपदेश ।

कुरान के पृष्ठो मे कोई बात भी इतनी साफ दिखाई नही देती जितनी यह कि कुरान ने बार बार स्पष्ट और निर्णायक शब्दो मे इस सच्चाई का एलान कर दिया है कि कुरान किसी नई मजहबी गिरोहबन्दी का सन्देश लकर ससार म नही आया, बल्कि वह विविध धर्मों की असली लडाइयो और झगडा स संसार को मुक्त कर उन सबको उसी एक मार्ग पर एकत्र कर देना चाहता है जो सब का एक सामान्य और सर्वसम्मत मार्ग है ।

कुरान बार बार कहता है कि जिस माग पर मे लोगो को बुलाता हूँ वह कोइ नया मार्ग नहीं, और न सत्य का कोई नया मार्ग हो ही सकता है । मेरा माग वही मार्ग है जो सनातन से चला आता है और जिसकी ओर सब धर्मों के प्रवर्तको ने मनुष्य को बुलाया है ।

شرع لكم من الدين ما
وصى به نوحا و الذي
اوحينا اليك و ما وصينا به
ابراهيم و موسى و عيسى ان
اقيموا الدين و لا تتفرقوا
فيه

और (देखो) उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही राह ठहराई है जिसकी वसीयत नूह से की गई थी, और जिस पर चलने की आज्ञा इब्राहीम, मूसा और ईसा को दी गई थी, (इन सब की

शिक्षा यही थी) कि अद्दीन (यानी परमात्मा का एक ही दीन) क़ायम रखो और इस मार्ग मे अलग अलग न हो जाओ। (सू० ४२, आ० १३)

सूरा ४ मे आया है—

انا اوحينا اليك كما
اوحينا الى نوح والنبيين من
بعده و اوحينا الى ابراهيم
و اسمعيل و اسحاق و يعقوب
و الاسباط و عيسى و ايوب
و يونس و هارون و سليمان
و اتينا داود زبورا — و رسلا
قد قصصناهم عليك من
قبل و رسلا لم نقصصهم
عليك

(ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम्हारे पास उसी तरह अपनी 'वही' (ईश्वरीय आदेश) भेजी है जिस तरह नूह के और उन सब पैग़म्बरो के पास भेजी थी जो नूह के बाद हुए, और जिस तरह इब्राहीम, इस्माईल, इस हाक, याकूब, याक़ूब के वशजों, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून, सुलैमान, इत्यादि के पास भेजी थी, और जिस तरह हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान की थी। इनके सिवा और भी पैग़म्बर हुए हैं जिनमे से कुछ का हाल हम तुम्हें सुना चुके है

और कुछ का नहीं। (सू० ४, आ० १६३)

सूरा ६ मे कुरान से पहले के रसूलो का उल्लेख करते हुए इस्लाम के पैगम्बर से कहा गया है—

اولىک الدىں هدي الله
فبهديهم اقتده

ये वे लोग हैं जिनको परमात्मा ने सत्य का मार्ग दिखाया। (इसलिए ऐ पैग़म्बर!) तुम भी इन्हीं की हिदायत का (अर्थात् इन्हीं के मार्ग का) अनुसरण करो। (सू० ६, आ० ९०)

इसीलिए कुरान के उपदेश की पहली बुनियाद यह है कि सब धर्मों के सस्थापको का और सब ईश्वरीय ग्रन्थो का समान रूप से समर्थन किया जाय, यानी यह विश्वास किया जाय कि वे सब सत्य पर थे, सब ईश्वर का सत्य सदेश पहुँचानवाले थ, और सब न एक ही सत्य और एक ही नियम की शिक्षा दी है, और उन सब की सर्वसम्मत शिक्षा के अनुसार चलना ही हिदायत और कल्याण का सच्चा मार्ग है।

قل امنا بالله و ما أنزل
علينا و ماانزل على ابراهيم

(ऐ पैगम्बर!) कह दो, हमारा तरीका तो यह है कि हम

و اسمعیل و اسحاق و یعقوب
و الاسباط و اوتی موسی و
عیسی والنبیون من ربہم -
لا نفرق بین احد منہم و
نحن لہ مسلمون

परमात्मा पर विश्वास करते हैं और जो कुछ आदेश हम को (ईश्वर की ओर से) दिया गया है उस पर विश्वास करते हैं, और जो कुछ इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याकूब, और याकूब के वंशवालों को आदेश दिया गया था, उस सब पर विश्वास रखते हैं, और इसी तरह जो कुछ मूसा, ईसा, और दुनिया के तमाम पैगम्बरों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया है उस सब पर हमारा विश्वास है। हम इनमें से किसी एक को भी दूसरे से अलग नहीं करते (कि उसे न माने और दूसरों को मानें, हम सब का समान रूप से समर्थन करते हैं), और हम परमात्मा के आज्ञाकारी हैं। (उसकी सच्चाई जहाँ कहीं और जिस किसी की जबानी भी आई हो उस पर हमारा

विश्वास है ।)—सू० ३, आ० ७८ ।

कुरान ने इस आयत मे और भी अनेक स्थलों पर ईश्वर के पैगम्बरो मे भेदभाव रखन को एक बहुत बडी गुमराही करार दिया है, और सच्चाई की राह ही यह बतलाई है कि तफ्रीक बैनर्रुसुल से इनकार किया जाय । 'तफरीक़ बैनर्रुसुल का अर्थ यह है कि खुदा के रसूला का समर्थन करन म भेदभाव किया जाय, यानी यह समझना कि इनमे से अमुक सच्चा था और अमुक सच्चा न था, अथवा किसी एक की सच्चाई को मानना और दूसरे की सच्चाई को न मानना, अथवा शेष सब की सच्चाइ को मानना और किसा एक से इनकार कर देना । कुरान कहता है कि प्रत्येक ऐसे सच्चे व्यक्ति का, जो ईश्वरीय धर्म के मार्ग पर चलना चाहता है यह कर्त्तव्य है कि वह बगैर किसी भेदभाव के सब पैगम्बरो, सब धर्मग्रन्थो, और सब धर्मो के उपदेशो पर एक समान रूप से विश्वास करे और किसी एक से भी इनकार न करे । उसका तरीका यह होना चाहिए कि वह कहे कि "सच्चाइ जहाँ भी प्रकट हुई है और जिस किसी के भी मुख से प्रकट हुइ है सच्चाई है और उस पर मेरा विश्वास है ।'

امن الرسول بما انزل — खुदा का पैगम्बर उस

اليه من ربه و المومنون — (ईश्वरीय वाणी) पर विश्वास

كل امن بالله و ملئكه
و كتبه و رسله - لا نفر
بين احد من رسله
قالوا سمعنا و اطعنا غفرانك
ربنا و اليك المصير

रखता है जो उसके पालनहार की तरफ़ से उस पर उतरी है, और उसके अनुयायी भी उस वाणी पर विश्वास करते हैं। ये लोग परमात्मा पर, उसके फरिश्तो पर, उसके धर्मग्रन्थो पर, और उसके रसूलों पर विश्वास करते हैं। (उनके विश्वास की पद्धति यही है कि वे कहते हैं कि) हम परमात्मा के रसूलों मे से किसी को दूसरे से अलग नही करते (कि किसी एक को मानें और दूसरे को न मानें। हम सब का समान रूप से समर्थन करते हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने धर्मों के सस्थापकों की पुकार सुन कर) कहा, "ऐ ख़ुदा! हमने तेरा सन्देश सुना और तेरी आज्ञा मानी, तेरी क्षमा हमें प्राप्त हो क्योंकि हम सब को अन्त में लौट कर तेरीही ओर आना है। (सू० २, आ० २८५)

कुरान कहता है खुदा एक ही है, उसकी सच्चाइ एक है, लेकिन उस सच्चाई का पैगाम बहुतों ने पहुँचाया है। फिर अगर तुम किसी एक पैगम्बर की बात का समर्थन करते हो और दूसरो से इनकार करते हो तो इसका मतलब यह हुआ कि एक ही सच्चाई को एक जगह मान लेते हो दूसरी जगह ठुकरा देते हो, अथवा एक ही बात मान भी लेते हो और रद्द भी कर देत हो। जाहिर है ऐसा मानना मानना नही है, बल्कि बहुत ही बुरे ढङ्ग का इनकार है।

कुरान कहता है, खुदा की सच्चाई उसकी अन्य सब बातो की तरह उसकी विश्व व्यापी देन है। वह न तो किसी युगविशेष से सम्बन्ध रखती है, न किसी वश अथवा जातिविशेष से, और न किसी सम्प्रदायविशष से ही। तुमने अपने लिए तरह तरह की जातीय, भौगोलिक और वंशगत हद बना ली हैं, लेकिन खुदा की सच्चाई के लिए तुम कोई इस तरह का भेदभाव नही कर सकत। खुदा की सच्चाई की न तो कोई जाति है, न कोइ वश, न कोइ भौगोलिक हदबन्दी है, और न कोई साम्प्रदायिक गिरोहबन्दी। वह खुदा के सूरज की तरह प्रत्येक स्थान में चमकती है और मनुष्यमात्र को रोशनी पहुँचाती है। अगर तुम परमात्मा की सच्चाई की खोज मे हो तो उसे एक ही कोने में मत ढूँढो, वह हर जगह प्रकट होती है और हर युग में अपना प्रकाश फैलाती है। तुम्हें किसी खास समय का, जाति का, देश का, भाषा का, और तरह तरह की गिरोहबन्दी का उपासक न होकर केवल खुदा का

और उसकी विश्वव्यापी सच्चाई का उपासक होना चाहिए। उसकी सच्चाई चाहे कहीं भी आई हो और चाहे जिस रूप में आई हो वह तुम्हारी निधि है और तुम उसके उत्तराधिकारी हो।

इसलिए कुरान ने 'तफ़रीक बैनर्रुसुल' की राह को जहाँ तहाँ इनकार (नास्तिकता) की राह करार दिया है और ईमान की राह उसके विपरीत यह बतलाई है कि बगैर भेदभाव के सब को माना जाय। कुरान कहता है कि इस संसार में मार्ग सिर्फ दो ही हैं, तीसरा नहीं हो सकता। ईमान का मार्ग यह है कि सब को मानो, इनकार की राह यह है कि सबका या किसी एक का इनकार करो। यहाँ किसी एक के इनकार का भी वही अर्थ है जो सबके इनकार का है।

ان الدیں یکفروں باللہ و
رسلہ و یریدوں ان یفرقوا
بیں اللہ و رسلہ و یقولوں
نوٴمں ببعص و نکفر ببعص و
یریدوں ان یتخدوا بیں
دلک سبیلا اولٰئک ھم لکافروں
حقا - و اعتدنا للکافریں
عدابا مھینا - و الدیں امنوا
باللہ و رسلہ و لم یفرقوا بیں
احد منھم اولٰئک سوف

जो लोग परमात्मा और
उसके पैगम्बरो को नहीं मानते
और चाहते हैं कि परमात्मा
और उसके पैगम्बरो में भेद करें
(यानी किसी को खुदा का रसूल
माने और किसी को न मानें),
और कहते हैं कि इनमे से
किसी को हम मानते है और
किसी को नहीं मानते, फिर
चाहते हैं कि (अविश्वास और

يؤتيهم اجورهم - و كان الله
غفورا رحيما

विश्वास के) बीच का कोई तीसरा मार्ग अख्तियार कर लें। विश्वास करो, ये ही लोग हैं जिनके अविश्वास (कुफ्र) मे कोई शक नहीं। जिन लोगों की राह अविश्वास की राह है उनके लिए उन्हें अपमानित करने वाला ईश्वरीय कोप तैयार है। लेकिन जो लोग परमात्मा और उसके सब पैगम्बरो पर विश्वास करते हैं और किसी एक पैगम्बर को भी दूसरे से प्रथक् नही करते (यानी किसी एक की सच्चाई से भी इनकार नहीं करत), निस्सन्देह ये ही लोग हैं जिन्हे परमात्मा शीघ्र उनके सुकर्मों का फल देगा। वह बडा ही दयालु और कृपालु है। (सू० ४, आ० १४९)

सूरा २ में सच्चे विश्वासी की राह यह बतलाई गई है—

و الذين يؤمنون بما أنزل
اليك و ما أنزل من قبلك -

और वे लोग जो उस सच्चाइ पर विश्वास करते हैं

و بالاخرة هم يوقنون - اولئک
علی هدي من ربهم و اولئک
هم المفلحون

जो इस्लाम के पैगम्बर पर प्रकट हुई है और उन सब सच्चाइयो पर भी विश्वास करते हैं जो इस्लाम से पहले दुनिया में प्रकट हो चुकी है, और जो आखिरत (आइन्दा) की जिन्दगी पर भी विश्वास रखते हैं, ये ही लोग हैं जो अपने परवरदिगार की ठहराई हुई हिदायत पर है, और ये ही हैं जिन्होंने कल्याण प्राप्त किया है। (सू० २, आ० २)

कुरान कहता है, अगर तुम्हे इस बात से इनकार नहीं है कि समस्त विश्व का सृजनहार एक ही है और वही परवरदिगार समान रूप से प्राणीमात्र का भरण पोषण कर रहा है, तो फिर तुम इस बात से कैसे इनकार कर सकते हो कि उसके आध्यात्मिक सत्य का नियम भी एक ही है, और वह नियम भी एक ही तरह पर मनुष्यमात्र को दिया गया है ? कुरान कहता है, तुम सब का परवरदिगार एक है, तुम सब एक ही परमात्मा के नाम-लेवा हो, तुम सब के पथप्रदर्शको ने तुम्हें एक ही पथ दिखलाया है, फिर यह कैसी गुमराही की पराकाष्ठा और बुद्धि का दिवाला है कि सूत्र एक है, लक्ष्य एक है, लेकिन एक समुदाय दूसरे समुदाय का शत्रु है,

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से घृणा करता है, और फिर ये सब लड़ाई झगड़े किस के नाम पर किये जाते है ? उसी परमात्मा और उसी परमात्मा के धर्म के नाम पर जिसने सब को एक ही चौखट पर झुकाया था और सब को एक भ्रातृत्व के सूत्र में बाधा था।

قل يا اهل الكتاب هل
تنقمون منا الا ان امنا بالله
و ما انزل الينا و ما انزل
من قبلك و ان اكثرهم
فاسقون

इन लोगो से कहो कि ऐ धर्मग्रन्थवालो ! तुम जो हमारा विरोध करने के लिए कटिबद्ध हो गये हो तो बतलाओ, इसके सिवा हमारा क्या अपराध है कि हम परमात्मा पर विश्वास करते हैं और जो कुछ सत्य हम पर प्रकट हुआ है और जो कुछ हम से पहले प्रकट हो चुका है, उस सब पर विश्वास रखते हैं ? (फिर क्या ईश्वर की उपासना करना और उसके पैगम्बरो का समर्थन करना तुम्हारे निकट अपराध और ऐब हैं ? अफसोस तुम पर !) तुम मे अधिकाश ऐसे ही हैं जो सत्य के मार्ग से सर्वथा पृथक् हैं । (सू० ५, आ० ६४)

ان الله ربي و ربكم
فاعبدوه – هذا صراط مستقيم

देखो, खुदा तो मेरा और तुम्हारा दोनों का परवरदिगार है। इसलिए उसकी उपासना करो, यही धर्म का सीधा मार्ग है। (सू० १९, आ० ३९)

قل أتحاجوننا في الله
و هو ربنا و ربكم و لنا
اعمالنا و لكم اعمالكم –
و نحن له مخلصون

(ऐ पैगम्बर ! इन से) कहो, क्या तुम परमात्मा के विषय मे हम से झगडा करते हो यद्यपि हमारा और तुम्हारा दोनों का पालनहार वही है, और हमारे लिए हमारे कर्म है, तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म (यानी प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मानुसार फल भोगना है, फिर इस बारे मे झगडा क्यो करते हो) ?—सू० २, आ० १३९।

यह बात याद रखनी चाहिए कि कुरान म जहाँ कहीं किसी को सम्बोधन किया गया है, जैसे कि ऊपर की आयत में "इन्नल्लाह रब्बी व रब्बुकुम्," अर्थात् परमात्मा मेरा और तुम्हारा दोनों का प्रतिपालक है। अथवा, 'इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिद'—हमारा और

तुम्हारा दोनो का खुदा एक ही है, अथवा, 'अ तोहाज्जूनना फिल्लाहि व हाव रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअमालुना व लकुम् अअमालुकुम,' अर्थात् 'क्या तुम खुदा के बारे मे हम से झगडा करते हो यद्यपि हमारा और तुम्हारा सब का पालनहार वही है और हमारे लिए हमारे कर्म और तुम्हारे लिए तुम्हारे,'— वहाँ वहाँ इन सब उक्तियो का उद्देश्य इसी तत्त्व पर जार देना है, याना जब सब का पालनहार एक ही है, और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मानुसार ही फल मिलत हे, तो फिर खुदा और धर्म के नाम पर ससार भर मे ये लडाइ और झगड क्यो हैं ? कुरान बार बार कहता है कि मेरी शिक्षा इसके सिवा और कुछ नही है कि इश्वर का उपासना और सदाचरण ही मनुष्य का कर्त्तव्य है, मै किसी धर्म को झूठा नही कहता, मै किसी धर्म के प्रवर्तक से इनकार नहीं करता, सबका समान रूप से समर्थन करता हू, और उन सबकी सामान्य और सर्वसम्मत शिक्षा हा मरी शिक्षा है, फिर मेरे विरुद्ध समस्त धर्मानुयायियो न लडाई का एलान क्यों कर दिया है ?

यही कारण है कि कुरान न किसी भी धर्म के अनुयायी से यह नही चाहा कि वह कोइ नया मत अथवा नया सिद्धान्त स्वीकार करे, बल्कि कुरान हर गिरोह के सामने यही माग पेश करता है कि तुम अपने धर्म की वास्तविक शिक्षा पर सच्चाई के साथ अमल करो। कुरान कहता है कि अगर तुमने ऐसा कर लिया तो मेरा काम पूरा हो गया, क्योंकि मेरा सन्देश कोई नया सन्देश नहीं है

बल्कि वही सनातन सार्वभौमिक सन्देश है जो समस्त धर्म संस्थापकों ने दिया है।

قل يا اهل الكتاب لستم
على شيء حتى تقيموا
التورية و الانجيل و ما
انزل اليكم من ربكم و
ليزيدن كثيرا منهم ما انزل
اليك من ربك طغيانا وكفرا
فلا تأس على القوم الكافرين -
ان الذين امنوا و الذين هادوا
و الصابئون و النصارى من
امن بالله و اليوم الاخر و
عمل صالحا فلا خوف عليهم
و لا هم يحزنون

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि ऐ धर्मग्रन्थवालो ! जब तक तुम तौरात और इञ्जील पर और उन सब धर्मग्रन्थों पर जो तुम पर प्रकट हुए हैं, ठीक ठीक अमल नहीं करोगे तब तक तुम्हारे पास धर्म का कोई अंश भी नहीं है। और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पालनहार की ओर से जो कुछ सत्य तुम्हारे ऊपर प्रकट हुआ है, (बजाय इसके कि ये लोग उससे हिदायत हासिल करें, तुम देखोगे कि) इनमें से बहुतों का अविश्वास और उनकी उद्दण्डता और भी ज्यादा बढ़ जायगी। जिन लोगों ने सच्चाई की जगह सत्य से इनकार करने की राह ग्रहण कर ली है, (वे कभी माननेवाले नहीं हैं)। तुम इनकी हालत

पर व्यर्थ अफसोस मत करो। चाहे
कोई तुम्हारी बताई हुई राह का
माननवाला हो चाहे कोई
यहूदा हो, चाहे ईसाई हो, चाहे
साबी हो, या कोई और हो,
(ईश्वर का कानून यह है कि)
जो कोई भी परमात्मा पर और
आखिरत के दिन (अर्थात् अन्त
मे सब को अपने अपने कर्मों
के फल मिलन के दिन) पर
विश्वास करता है, और उसके
कर्म भी अच्छे है, तो उसके लिए
न तो किसी प्रकार का खटका है
और न किसी प्रकार का शोक।
(सू० ५ आ० ७३)

यही कारण है कि कुरान न उन सब सत्यनिष्ठ मनुष्यो के विश्वास और व्यवहार को पूरी उदारता के साथ ठीक बताया है जो कि कुरान के आविभाव के समय भिन्न भिन्न धर्मों मे मौजूद थे और जिन्हो ने अपन अपन धर्मों के वास्तविक सार को नष्ट नहीं किया था। यह ठीक है कि कुरान ऐसे लोगो की सख्या को बहुत ही कम बताता है, और कहता है कि अधिकतर सख्या उन्हीं लोगो

की है जिन्होंने ईश्वरीय धर्म की विश्वास-सम्बन्धी और व्यवहार सम्बन्धी सच्चाई को एक बारगी नष्ट कर दिया है।

ليسوا سوا - من
اهل الكتاب امه قائمه
يتلون ايات الله انا الليل
و هم يسجدون - يومنون
بالله و اليوم الاخر و يامرون
بالمعروف و ينهون عن المنكر
و يسارعون فى الخيرات و
اولئک من الصالحين - و
ما يفعلوں من خير فلن
يكفروه - و الله عليم
بالمتقين -

यह बात नहीं है कि सब लोग एक ही तरह के हों। इन्हीं धर्मग्रन्थवालो मे कुछ ऐसे भी हे जो वास्तविक धर्म मे कायम है। वे रात को उठ उठ कर इश्वर की वाणी (धर्मग्रन्थों) का पाठ करते हैं और प्रभु के सम्मुख नतमस्तक रहते हैं। वे ईश्वर पर और आखिरत के दिन पर विश्वास करते हैं, नेका की आज्ञा देते हैं, बुराई से रोकते है और स्वयं नेकी की राह मे तेज क़दम है। निस्सन्देह वे नेक मनुष्यो मे से हैं। याद रखो, ये लोग जो कुछ भी नेकी करते है, हरगिज़ ऐसा नहीं होगा कि उसकी क़द्र न की जाय और वह नष्ट हो जाय। मनुष्यों का हाल परमात्मा से छिपा नहीं

है। वह जानता है कि कौन धर्म-निष्ठ है और कौन नही। (सू० ३, आ० १११)

منهم امة مقتصدة - و كثير منهم ساء ما يعملون

उनमे से एक गिरोह ऐसे लोगो का है जो बीच के रास्ते पर है। लेकिन अधिक संख्या ऐसे ही लोगो की है जो जो कुछ करते हैं बहुत बुरा करते हैं। (सू० ५ आ० ७१)

कुरान जगह जगह अपने से पहले के धर्मग्रन्थो का समर्थन करता है, और इस बात पर जोर देता है कि वे झूठे नही है। अन्य धर्मग्रन्थवालो से कुरान बार बार कहता है—'व आमिनू बिमा अन्जलूतो मुसद्दिकल्लिमा मअकुम (२ ३८) यानी उस किताब पर विश्वास करो जो तुम्हारी किताब का समर्थन करती हुई प्रकट हुई है। इन सब से कुरान का उद्देश्य उसी सच्चाई पर जोर देना है, यानी यह कि जब मेरी शिक्षा तुम्हारे पवित्र ग्रन्थो के विरुद्ध कोई नई बात पेश नही करती और न उनसे तुम्हे पृथक करना चाहता है, बल्कि सब तरह से उनकी पुष्टि और उनका समर्थन करती है, तो फिर तुममे और मुझमे लडाई क्यो हो? तुम मेरे विरुद्ध युद्ध की घोषणा क्यो करते हो?

कुरान ने नेकी के लिए 'मारूफ' का, और बुराई के लिए 'मुन्कर' शब्द का उपयोग किया है। 'वअमुर् बिल मारूफे वनह

अनिल मुनकर' (३१ ३६)। 'मारूफ' 'अरफ' धातु से है जिसका अर्थ पहचानना है। इस लिए मारूफ वह बात हुई जो जानी पहचानी हुई हो। 'मुनकर' का अर्थ इनकार करना है, यानी ऐसी बात जिससे आम तौर पर इनकार किया गया हो। कुरान ने नेकी और बुराई के लिए इन शब्दो का उपयोग इस लिए किया है क्योंकि वह कहता है ससार मे विश्वास और विचारो की भिन्नता कितनी ही क्यो न हो, कुछ बाते ऐसी हैं जिनके अच्छे होने मे सभी सहमत हैं, और कुछ ऐसी है जिनके बुरे होने मे सब की एक राय है। जैसे इन बातो में सभी एक मत है कि सच बोलना अच्छा है और झूठ बोलना बुरा, इमानदारी अच्छी बात है, और बेईमानी बुरी। इसम भी किसी का मतभेद नही कि मातापिता की सेवा, पडोसियो स सद्व्यवहार, दरिद्रो का खबर लेना, पीडितो की सहायता करना, ये सब अच्छे काम है। और अन्याय और अत्याचार बुरे काम है। अर्थात् ये वे बात हुई जिनकी अच्छाइ आम तौर पर जानी बूझी हुई है और जिनके विरुद्ध चलना आम तौर पर अनुचित और निन्दनीय है। ससार के सब धर्म, ससार के सब आचार, ससार की सारी बुद्धिमत्ता, ससार के सब समाज, दूसरी बातो मे चाहे जितना मतभेद रखते हो, लेकिन जहा तक इन कामो का सम्बन्ध है सब एक मत हैं।

१४ कुरान कहता है, ईश्वरीय धर्म उन्हीं कामों को मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य करार देता है जिनकी अच्छाई आम तौर पर मनुष्यसमाज ने समझ ली है। इसी तरह उन सब कामो को

ईश्वरीय धर्मनिषिद्ध करार देता है जिन्हें आम तौर पर लोग अस्वीकार करते है और जिन्हे बुरा कहने म सभी धर्म सहमत हैं। यह बात चूँकि धर्म का मौलिक तत्त्व थी इसलिए इसमें मतभेद न हो सका और विविध मजहबी गिरोहो में अगणित गुमराहियो के होत हुए तथा उनके अनेक सचाइयो को भुला देने पर भी, यह सच्चाई सदा प्रकट और सर्वमान्य बनी रही। इन कामा की अच्छाई और बुराई पर ससार भर के अन्दर सब युगो, सब धर्मों, और सब क़ौमो के लोग सहमत हैं, इसी से इन बातो की इलहामी असलीयत अर्थात् उनका ईश्वर की ओर से मनुष्य को आदेश होना साबित होता है। इसलिए जहाँ तक कर्मों का सम्बन्ध है, कुरान उन्ही वातो के करने की आज्ञा देता है जिनकी अच्छाई सब की जानी हुइ है और उन्ही बातो से रोकता है जिनसे आमतौर पर मनुष्यमात्र ने इनकार किया है, यानी 'मारूफ़' की आज्ञा देता है, और 'मुनकर' से रोकता है। इसलिए कुरान कहता है कि जब मेरे उपदेश का यह हाल है तो फिर किसी भी व्यक्ति को, जिसको नेकी और सच्चाई से विराध नही, मुझसे विरोध क्यो हो ?

कुरान कहता है, यही कर्ममार्ग मनुष्यसमाज के लिए ईश्वर निर्द्धारित प्राकृतिक धर्म (दीन) है, और प्रकृति के नियमों मे कभी अन्तर नहीं पड सकता, और यही 'अद्दानुल् कय्यिम' यानी सीधा और दुरुस्त धर्म है, जिसमे किसी प्रकार का टेढ़ापन या कच्चापन नहीं है। यही 'हनीफ' (सीधा) धर्म है, जिसका उपदेश हजरत इब्राहाम ने किया था। इसी का नाम कुरान की भाषा मे

'अल् इस्लाम' है जिसका अर्थ है ईश्वर के बनाये हुए नियमों का पालन करना।

فاقم وجهک للدین حنیفا
فطرت اللہ التی فطرالناس
علیها - لا تبدیل لخلق
اللہ - ذلک الدین القیم -
و لکن اکثر الناس لا یعلمون -
منیبین الیہ و اتقوہ و
اقیموا الصلوۃ و لا تکونوا من
المشرکین من الذین فرقوا
دینهم و کانوا شیعا - کل حزب
بما لدیهم فرحون

धर्म (दीन) की राह में हर तरफ़ से मुँह फेर कर सिर्फ़ एक परमात्मा ही की तरफ़ रुख कर लो। यही ईश्वरनिर्धारित प्रकृति है जिसके अनुसार उसने मनुष्य को पैदा किया है, इसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। यही धर्म का सीधा मार्ग है। लेकिन प्राय मनुष्य ऐसे हैं जो इसे नहीं जानते। उसी (एक परमात्मा) की ओर दृष्टि लगाये रखो, उसकी अवज्ञा से बचो। नमाज कायम करो और मुश्रिकों मे से न हो जाओ, जिन्होने अपने धर्म के टुकड़े टुकड़े करके अलग अलग गिरोह-बन्दियां कर ली। हर गिरोह के पास जो कुछ है वह उसी मे मग्न है। (सू० ३०, आ० ३० ३२)

कुरान कहता है, ईश्वर का ठहराया हुआ धर्म (दीन) जो कुछ है वह यही है। इसके सिवा जो कुछ बना लिया गया है वह मनुष्य की गढी हुई गिरोहबन्दियों का फल है। इसलिए अगर तुम ईश्वरोपासना के तत्त्व पर जो तुम सब के यहां धर्म की जड है, एकत्र हो जाओ और अपनी गढी हुई गुमराहियों को छोड दो, तो मेरा उद्देश्य पूरा हो गया। मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहता।

ان الدس عند الله
الاسلام و ما احتلف الدس
اوبوا الكتاب الا من بعد
ما جاءهم العلم بغيا بينهم
و من يكفر بايات الله
فان الله سريع الحساب
فان حاجوک فقل اسلمت
وجهي لله و من اتبعن -
و قل للذين اوتوا الكتاب
و الاميين ء اسلمتم فان
اسلموا فقد اهتدوا - و ان
تولوا فانما عليک البلاغ
و الله بصير بالعباد

परमात्मा के नजदीक धर्म एक ही है, और वह 'अल् इस्लाम' है, और यह जो धर्मग्रन्थ वालों ने विभिन्नता डाल दी (एक धर्म पर एकत्र रहने की जगह यहूदीमत और ईसाइमत की गिरोहबन्दियों में बंट गये), यह इसलिए हुआ कि यद्यपि ज्ञान और सत्य की राह उन पर खुल चुकी थी लेकिन आपस की ज़िद और विद्रोह के कारण अलग हो गये। (स्मरण रखो) जो कोई ईश्वर की आज्ञाओं से इनकार करता है, ईश्वर के कर्मफल-सम्बन्धी नियम भी उससे हिसाब

लेने मे वैसे ही तेज हैं। फिर अगर यह लोग तुमसे इस बारे मे झगडा करें तो (ऐ पैगम्बर !) तुम उनसे कहो कि मेरी और मेरे अनुयायियो की राह तो ईश्वर के आगे बन्दगी मे सर झुका देना है और हमने सर झुका दिया है। फिर धर्मग्रन्थ वालो से और अशिक्षित लोगों से (यानी अरब के मुश्रिकों से) पूछो कि तुम भी परमात्मा के आगे झुकते हो या नहीं (यानी झगडे की सारी बातें छोडो और यह बतलाओ कि तुमको खुदा-परस्ती स्वीकार है या नहीं) ? अगर वे झुक गये तो (सारा झगडा खत्म हो गया और) उन्होने राह पा ली, अगर वे मुह मोड लो (फिर जिन लोगो को इश्वरभक्ति की ऐसी स्पष्ट बातो से भी इनकार है उनके साथ वादविवाद और कलह करने से

क्या लाभ) ? तुम्हारे जिम्मे जो
कुछ है वह यही है कि सत्य का
सन्देश पहुँचा दो, (बाक़ी सब
कुछ परमात्मा पर छोड़ दो।
परमात्मा से बन्दो का हाल
छिपा नहीं है। (सू० ३, आ०
१८, १९)

कुरान ने धर्म के लिए 'अल् इस्लाम शब्द का इसलिए उपयोग किया है कि 'इस्लाम' का अर्थ किसी बात को मान लेने और आज्ञापालन करन का है। कुरान कहता है कि धर्म की असलीयत यही है कि ईश्वर न जो कल्याण का मार्ग मनुष्य के लिए निश्चत कर दिया है उसका ठीक ठीक अनुसरण किया जाय। वह कहता है कि यह मार्ग कवल मनुष्य ही के लिए नही है बल्कि समस्त सृष्टि इसी नियम पर कायम है। सब की स्थिरता और उनके क़ायम रहने के लिए ईश्वर न कोई न कोई कर्ममार्ग स्थिर कर दिया है, और सब उसी का अनुसरण करते हैं। यदि एक क्षण के लिए भी वे उससे विमुख हो तो सारी सृष्टि छिन्नभिन्न हो जाय।

افغير دين الله يبغون و — फिर क्या ये लोग चाहते हैं
له اسلم من في السموت و — कि परमात्मा का ठहराया हुआ

الارض طوعا و كرها و اليه
يرجعون

धर्म छोड़ कर कोई दूसरा धर्म खोज निकाले जब कि पृथ्वी और आकाश में जितने प्राणी हैं सब, चाहें या न चाहें, उसी के ठहराये हुए कर्ममार्ग पर चल रहे हैं और (अन्त में) सब को उसी की ओर लौटना है। (सू० ३, आ० ८२)

कुरान जब कहता है कि 'अल्-इस्लाम' के अतिरिक्त और कोई धर्म परमात्मा के निकट मान्य नहीं तो इसका मतलब यही होता है कि उस ईश्वरीय धर्म के सिवा जो एक ही है और जिसकी शिक्षा समस्त पैगम्बरों ने समान रूप से दी है मनुष्यनिर्मित कोई भी गिरोहबन्दी मान्य नहीं हो सकती। सूरा ३ में, जहां यह वर्णन आया है कि ईश्वरीय धर्म का मार्ग सभी धर्मप्रवर्त्तकों का समर्थन करने और उनका अनुसरण करने का मार्ग है, वहीं साथ साथ यह भी कहा गया है—

و من يبتغ غير الاسلام
دينا فلن يقبل منه - و هو
في الاخرة من الخاسرين

और जो कोई इस्लाम के सिवा (जो विश्वव्यापी सत्य और सब के समर्थन का मार्ग है) कोई दूसरा धर्म चाहेगा, तो

याद रखो, उसकी राह कभी
स्वीकार नहीं की जायगी, और
वह अन्त मे देखेगा कि उसका
स्थान लाभ उठानेवालो मे नही,
बल्कि नुकसान उठानेवालो में
है। (सू० ३, आ० ८४)

इसीलिए कुरान अपने समस्त अनुयायियो को बार बार साव धान करता है कि धर्म मे भेद डालने और गिरोहबन्दी करने से बचो, और फिर से उसी गुमराही मे न पड जाओ जिससे मैने तुम्हे छुटकारा दिलाया है। कुरान कहता है कि मेरे उपदेश ने मनुष्यमात्र को, जो धर्म के नाम पर एक दूसरे के शत्रु हो रहे थ, इश्वरनिष्ठा के मार्ग मे इस तरह मिला दिया कि वे एक दूसरे के लिए प्राण न्योछावर करनेवाले भाई भाई बन गये। एक यहूदी जो पहले हजरत ईसा का नाम सुनते ही घृणा से मर जाता था, एक ईसाई जो हर यहूदी के खून का प्यासा था एक पारसी जिसके नजदीक सब गैर पारसी अपवित्र थ, एक अरब जो अपने सिवा सब को सभ्यता और गुणो से वञ्चित समझता था, एक साबी जो यह विश्वास करता था कि ससार का सनातन सत्य सिर्फ मेरे ही हिस्से मे पडा है, इन सब को कुरान के उपदेश ने एक पंक्ति में खडा कर दिया, और अब यह सब परस्पर घृणा करने के बदले एक दूसरे के धर्मप्रवर्तको का समर्थन करते हैं, और सब की बतलाई हुई सर्वसम्मत हिदायत पर चलते हैं।

و اعتصموا بحبل الله
جميعا و لا تفرقوا - و اذكروا
نعمت الله عليكم اذ كنتم
اعداء فالف بين قلوبكم
فاصبحتم بنعمته اخوانا -
و كنتم على شفا حفرة من
النار فانقذكم منها - كذلك
يبين الله لكم اياته لعلكم
تهتدون

और (देखो), सब मिल जुल कर परमात्मा की रस्सी मजबूती से पकड़ लो और पृथक् पृथक् न हो। परमात्मा ने तुम्हारे ऊपर जो दया और अनुकम्पा की है उसे स्मरण रखो। तुम्हारा हाल यह था कि एक दूसरे के शत्रु हो रहे थे, लेकिन ईश्वर ने तुम्हारे हृदय में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया, फिर ऐसा हुआ कि तुम भाई भाई हो गये और (देखो), तुम्हारा तो यह हाल था कि मानो धधकती आग के गड्ढे के किनारे खड़े थे लेकिन ईश्वर ने तुम्हें इस खतरे से बचा लिया (और जीवन तथा सफलता के राजमार्ग पर पहुँचा दिया)। परमात्मा इसी तरह अपनी निशानियों का तुम्हें परिचय दिया करता है ताकि तुम हिदायत पाओ (और गुमराही से बचो)।—सू० ३, आ० ९८।

و لا تكونوا كالدين تفرقوا
و احتلفوا من بعد ما جاء
هم البينات - و اولئك لهم
عداب عطيم

और (देखो), उन लोगों की सी चाल मत स्वीकार कर लेना जो (एक धर्म पर स्थिर रहने के बदले) अलग अलग हो गये और जिन्होने आपस में विरोध पैदा कर लिये, यद्यपि प्रमाण उनके सामने आ चुके थे। (याद रखो) यह वे लोग हैं जिनके लिए (सफलता और कल्याण की जगह) भयकर कष्ट है। (सू० ३, आ० १०१)

و ان هذا صراطی مستقيما
فاتبعوه - و لا تتبعوا السبل
فتفرق بكم عن سبيله - دلكم
وصيكم به لعلكم تتقون

और (देखो), यह मेरी राह है बिलकुल सीधी राह, इसलिए इसी एक राह पर चलो और तरह तरह के मार्गों के पीछे न पडो। वे तुम्हे ईश्वरीय मार्ग से हटा कर पृथक् पृथक् कर देंगे। यही बात है जिसके लिए खुदा तुम्हें आज्ञा देता है ताकि तुम अवज्ञा से बचो। (सू० ६, आ० १५५)

६। कुरान और उसके विरोधियों में झगड़े का कारण।

अब थोडी देर के लिए उस झगडे की ओर ध्यान दीजिए जो कुरान और उसके विरोधियों मे उत्पन्न हो गया था। ये विरोधी कौन थ ? ये पिछले धर्मों के अनुयायी थे, जिनमे से कुछ के पास धर्म ग्रन्थ थे और कुछ के पास नहीं थे।

झगडे का कारण क्या था ? क्या यह कारण था कि कुरान ने उन धर्मों के सस्थापकों और पथ प्रदर्शकों को झूठा कहा था, या उनके पवित्र धर्म ग्रन्थो से इनकार किया था, और इसलिए वे उसका विरोध करने पर कटिबद्ध हो गये थे ?

क्या यह कारण था कि कुरान ने इस बात का दावा किया कि ईश्वरीय सत्य केवल मेरे ही हिस्से पडा है, और अन्य समस्त धर्मों के अनुयायियों को उचित है कि वे अपने अपन धर्मों को छोड दें ?

या, फिर कुरान ने धर्म के नाम पर कोई ऐसी बात उपस्थित कर दी थी जो अन्य धर्मानुयायियों के लिए बिलकुल नई थी, और इस कारण कुरान को मानने मे उन्हें आपत्ति थी ?

कुरान के पृष्ठ खुले हुए हैं, और उसके आने का इतिहास भी दुनिया के सामने है। ये दोनों हमें बतलाते हैं कि ऊपर की बातों में से कोई बात भी न थी, और न हो सकती थी। कुरान ने न

केवल उन सारे धर्मसस्थापका का प्रमाण माना, जिनके नामलवा उसके सामन थे, बलिक साफ़ शब्दा म कह दिया कि मुझस पहले जितन भी रसूल और धम प्रवर्तक आ चुके हैं मैं सबका प्रमाण मानता हूँ, और उनमे से किसी एक के न मानन को भी ईश्वराय सत्य से इनकार करना समझता हूँ। उसन किसी धमवाले से यह नहीं चाहा कि वह अपने धम को छोड दे, बलिक जब कभी चाहा तो यही चाहा कि सब अपन अपने धर्मों की वास्तविक शिक्षा पर अमल कर, क्योंकि समस्त धर्मों की वास्तविक शिक्षा एक ही है। न तो उसने कोई नवीन सिद्धान्त उपस्थित किया, और न कोई नवीन काय-पद्धति ही बतलाइ। उसन सदा उन्हीं बाता पर ज़ोर दिया जो ससार के समस्त धर्मों की सबसे ज़्यादा जानी बूझी हुइ बाते रही हे—यानी एक जगदीश्वर की उपासना और सदाचरण का जीवन। उसन जब कभी लोगो को अपनी ओर बुलाया है, ता यहा कहा है कि अपने अपन धर्मों की वास्तविक शिक्षा को फिर स ताज़ा कर लो, तुम्हारा ऐसा करना ही मुझे कबूल कर लेना है।

प्रश्न यह है कि जब कुरान के उपदेशा का यह हाल था तो फिर आखिर उसमें और उसके विरोधियो में झगडे का क्या कारण हुआ? जो व्यक्ति किसी को बुरा नहीं कहता, सबको मानता और सबकी इज्जत करता है, और हमेशा उन्ही बाता का उपदेश करता है जो सबके यहा मानी हुई हैं, उससे कोई लडे तो क्यो लडे? और क्यों लोगों को उसका साथ देने से इनकार हो?

कहा जा सकता है कि मक्के के कुरैशों * का विरोध इस आधार पर था कि कुरान ने मूर्ति पूजा से इनकार कर दिया था, और वे मूर्ति पूजा से प्रेम रखत थे। निस्सन्देह विरोध का कारण एक यह भी था, लेकिन सिर्फ यही कारण नही हो सकता। प्रश्न यह होता है कि यहूदियो न क्या विरोध किया, जो मूर्ति पूजा से बिलकुल अलग थे ? इसाइ क्या विरोधी हो गये। उन्होन तो कभी मूर्ति-पूजा की हिमायत का दावा नहा किया ?

असल बात यह है कि इन धर्मो के अनुयायियो न कुरान का विरोध इसलिए नहीं किया कि वह उन्हे झूठा क्यो बतलाता था, बल्कि इसलिए किया कि वह उन्हे झूठा क्यो नही कहता था। हर धर्म का अनुयायी यह चाहता था कि कुरान केवल उसी को सच्चा कहे, बाकी सबका झूठा कहे, और चूँकि कुरान सबका समानरूप से समर्थन करता था, इसलिए कोइ उससे प्रसन्न नहीं हो सकता था। यहूदी इस बात से तो बहुत प्रसन्न थे कि कुरान हजरत मूसा को प्रमाण मानता है। लेकिन वह सिर्फ इतना ही नहीं करता था, वह हजरत ईसा को भा प्रमाण मानता था, और यही आकर उसके और यहूदियो के बीच विरोध खडा हो जाता था। ईसाइयों को इस पर क्या आपत्ति हो सकती थी कि हजरत ईसा और हजरत मरियम की शुचिता और सचाई की घोषणा की जाय ? लेकिन कुरान सिर्फ इतना ही नहीं कहता था, वह यह भी कहता था कि मुक्ति

* 'कुरैश' मक्के में रहनेवाला एक वंश जिसमें मुहम्मद पैदा हुए। यही लोग काबे के पुजारी थे।

का दार-मदार मनुष्यो के अपने कर्मो पर है, न कि हजरत ईसा की कुरबानी और बपतिस्मे पर। किन्तु मुक्ति का यह व्यापक नियम ईसाई सम्प्रदाय के लिए असह्य था।

इसी प्रकार मक्का के कुरैशो के लिए इससे बढकर प्रसन्नता की बात और कोई नही हो सकती थी कि हजरत इब्राहीम और हजरत इस्माईल का महत्व स्वीकार किया जाय। लेकिन जब वे देखते थे कि कुरान जिस तरह इन दोनो का महत्व स्वीकार करता है उसी तरह यहूदियो तथा इसाइयो के पैगम्बरो का भी स्वीकार करता है, तो उनके जातिगत और साम्प्रदायिक अभिमान को बडी ठेस लगती थी। वे कहते थे कि ऐसे व्यक्ति हजरत इब्राहीम और इस्माइल के अनुयायी कैसे हो सकते है, जो उनके महत्व और सच्चाई की पक्ति मे दूसरो को भी लाकर खडा कर देते है ?

साराश यह कि कुरान के तीन सिद्धान्त ऐसे थे जो उसके तथा अन्य धर्मो के अनुयायियो के बीच विरोध के कारण हो गये—

(१) कुरान धर्म के नाम पर गिरोहबन्दी का विरोधी था, और सब धर्मो की एकता का एलान करता था। अगर अन्य धर्मों के अनुयायी यह मान लेते, तो उन्हें यह भी मानना पडता कि धर्म की सच्चाई किसी एक ही गिरोह के हिस्से मे नहीं आई है बल्कि सबको समानरूप से मिला है। परन्तु यही मानना उनकी साम्प्रदायिकता के लिए घातक था।

(२) कुरान कहता था—मुक्ति और कल्याण का दार-मदार कर्मों पर है, वश, जाति, सम्प्रदाय, अथवा बाह्य रीति रिवाजो पर

नहीं। यदि वे इस तथ्य को मान लेते, तो मुक्ति का द्वार बिना भेदभाव मनुष्यमात्र के लिए खुल जाता और किसी एक सम्प्रदाय की ठेकेदारी बाक़ी न रहती। लेकिन इस बात के लिए उनमें से कोई भी तय्यार न था।

(३) कुरान कहता था, वास्तविक धर्म ईश्वरोपासना है, और ईश्वरोपासना यह है कि बिना किसी और को बीच मे लाये एक परमात्मा की सीधी उपासना की जाय। लेकिन दुनिया के समस्त सम्प्रदायों ने किसी न किसी रूप में बहुईश्वरवाद और मूर्ति-पूजा के ढंग स्वीकार कर लिये थे। यद्यपि उनको इससे इनकार नहीं था कि वास्तविक धर्म ईश्वरोपासना ही है, और ईश्वर एक ही है, तथापि अपनी रूढियो और प्रथाओ से अलग होना उन्हे बेतरह खलता था।

७ । साराश

ऊपर की सारी बहस का सार इस प्रकार दिया जा सकता है—

(१) कुरान के आने के समय वशों, कुटुम्बो और परिवारों के अलग अलग सामाजिक रहन सहन की तरह संसार के धर्मो में भी अलग अलग दलबन्दियाँ कर ली गई थीं। प्रत्येक दल का आदमी यही समझता था कि धार्मिक सत्य सिर्फ मेरे ही हिस्से में पडा है। जो व्यक्ति इस धार्मिक परिधि के अदर है, वह मुक्त है जो बाहर है, वह मुक्ति से वचित है।

(२) प्रत्येक दल धर्म के केवल वाह्य कर्मो और रीतियो को ही धर्म की असलीयत और उसका तथ्य समझता था। ज्योही कोइ व्यक्ति इन वाह्य रीति रिवाजो को अगीकार कर लेता, त्यो ही यह विश्वास कर लिया जाता कि मुक्ति और कल्याण उसे प्राप्त हो गया—जैसे, उपासना का एक विधिविशेष, कुरबानिया के रीति रिवाज, किसी विशेष प्रकार का भाजन करना या न करना, किसी विशष वेश भूषा का स्वीकार करना या न करना।

(३) चूँकि ये रीति रिवाज प्रत्येक सम्प्रदाय मे भिन्न भिन्न थ इसलिए प्रत्येक धर्म का अनुयायी विश्वास करता था कि दूसरे सम्प्रदाय वालो के पास धार्मिक सच्चाई नही है, क्योकि उनके कर्म और रीति रिवाज वैसे नहीं हैं, जैसे मेरे है।

(४) प्रत्येक सम्प्रदाय का दावा सिर्फ यही नही था कि वह सच्चा है, बल्कि यह भी था कि दूसरा झूठा है। परिणाम यह था कि हर सम्प्रदाय केवल अपनी सच्चाई की घोषणा करके ही सन्तोष नहीं करता था, बल्कि दूसरों के विरुद्ध पक्षपात और घृणा फैलाना भी आवश्यक समझता था। इस परिस्थिति ने मनुष्यो को निरन्तर लडाई झगडा मे फँसा रखा था। धर्म और ईश्वर के नाम पर प्रत्येक गिरोह दूसरे गिरोह से घृणा करता और उसका खून बहाना जायज़ समझता था।

(५) लेकिन कुरान ने मनुष्यमात्र के सम्मुख नये सिरे से इस सिद्धान्त को उपस्थित किया कि धर्म की सच्चाई विश्वव्यापी सच्चाई है।

(क) उसने सिर्फ यही नही बतलाया कि प्रत्येक धर्म में सच्चाई है, बल्कि यह भी साफ साफ कह दिया कि सभी धर्म सच्चे हैं। उसने कहा कि धर्म परमात्मा की एक ऐसी देन है जो सबको समान रूप से प्राप्त है इसलिए सम्भव नहीं कि यह देन किसी एक जाति या गिरोह ही को दी गई हो और दूसरो का इसमे कोई हिस्सा न हो।

(ख) उसने कहा कि परमात्मा के समस्त प्राकृतिक नियमो की तरह मनुष्य के आध्यात्मिक कल्याण का नियम भी एक ही है, और सबके लिए है। इसलिए विविध धर्मों के अनुयायियों की सबसे बडी भूल यह है कि उन्होंने ईश्वरीय धर्म की एकता को भूलकर अपने अपने अलग अलग गिरोह

बना लिये हैं, और हर गिरोह दूसरे गिरोह से लड रहा है।

(ग) कुरान ने बतलाया कि ईश्वरीय धर्म इसलिए था कि मनुष्य समाज के परस्पर भेदभाव और झगडे दूर हो, इसलिए न था कि वह स्वय विरोध और लडाई का कारण बन जाय, इसलिए इससे बढकर गुमराही और क्या हो सकती है कि जो वस्तु भेदो को दूर करने आई थी, वही भेदो की जड बना ली गई ?

(घ) उसने बतलाया कि धर्म एक चीज है, और विधि विधान दूसरी। धर्म एक ही है, और एक प्रकार से सबको दिया गया है। हाँ, विधि विधान मे भेद हुआ है, और यह भेद अनिवार्य था, क्योकि हर युग और हर जाति की अवस्था एक सी नही थी। यह आवश्यक था कि जैसी जिसकी अवस्था हा, उसी के अनुसार विधि और व्यवस्था उसे बताइ जाय। इसलिए विधि विधान के भिन्न भिन्न होने से असली धर्म भिन्न भिन्न नहीं हो सकता। तुमने धर्म के तत्त्व को तो भुला दिया है और केवल विधि विधान क भेदों को लेकर एक दूसरे को झुठा कह रहे हो।

(च) उसन बतलाया कि तुम्हारी धार्मिक दलबन्दियों और उनके वाह्य रीति रिवाज का मनुष्य की मुक्ति और कल्याण के साथ कोइ सम्बन्ध नहीं। ये दलबन्दिया तुम्हारी बनाई हुई हैं। ईश्वर का ठहराया हुआ धर्म तो एक ही है, और वह सच्चा धर्म क्या है ? कुरान बताता है—एक ईश्वर की उपासना और सदाचरण का जीवन। जो व्यक्ति भी ईश्वर पर विश्वास रखेगा और

सदाचरण का मार्ग ग्रहण करेगा, उसके लिए मुक्ति है, चाहे वह तुम्हारी गिरोहबन्दी मे शामिल हो, या न हो।

(छ) कुरान ने साफ़ साफ शब्दों में घोषित कर दिया कि उसके उपदेशो का उद्देश्य इसके सिवा और कुछ नहीं कि सभी धर्मों के अनुयायी अपन सर्वसम्मत और सर्वस्वीकृत सत्य पर एकत्र हो जायँ। वह कहता है कि सभी धम सच्चे है, लेकिन उनके अनुयायी सच्चाई के रास्ते से भटक गये हैं। अगर वे अपनी भूली हुई सचाई फिर से अख्तियार कर लें, तो मेरा काम पूरा हो गया, और उन्होने मुझे क़बूल कर लिया। सभी धर्मों की यही सर्वसम्मत और सर्वस्वीकृत सच्चाई है जिसे कुरान अल् दीन (अद्दीन) और 'अल् इस्लाम' के नाम से पुकारता है।

(ज) कुरान कहता है, ईश्वर का धम इसलिए नहीं है कि एक मनुष्य दूसरे से घृणा करे, बल्कि इसलिए है कि प्रत्येक मनुष्य दूसरे से प्रेम करे और सब एक हो परमपिता के भक्ति सूत्र मे बँध कर एक हो जायँ। वह कहता है, जब सबका पालनकर्ता एक है, जब सब का लक्ष्य उसी की भक्ति है जब प्रत्येक व्यक्ति के लिए वही होना है, जैसा कि उसका कर्म है, तो फिर ईश्वर और धर्म के नाम पर ये समस्त विरोध और लडाइयाँ क्यों हैं ?

(६) ससार के धर्मों की परस्पर भिन्नता केवल भिन्नता तक ही परिमित नहीं रही, बल्कि पारस्परिक घृणा और शत्रुता का भी साधन बन गई है। प्रश्न यह है कि यह शत्रुता दूर कैसे हो ?

यह तो हो नही सकता कि सब धर्मों के अनुयायी अपने दावे मे सच्चे मान लिये जायँ, क्योकि प्रत्येक धर्म का अनुयायी सिर्फ यही दावा नही करता कि मै सच्चा हूँ, बल्कि यह भी दावा करता है कि दूसरे झूठे हैं। इसलिए अगर उन सब के दावे मान लिये जायँ, तो मान लेना पडेगा कि हर धर्म एक ही समय में सच्चा भी है और झूठा भी। यह भा नही हो सकता है कि सबको झूठा करार दिया जाय, क्योकि अगर सब धर्म झूठे हैं, तो फिर धार्मिक सत्य है कहा? इसलिए यदि कोइ तरीका झगडा मिटाने का हो सकता है, तो वह वही है जिसका उपदेश लेकर कुरान प्रकट हुआ है। सारे धर्म सच्चे है, क्योकि वास्तविक धर्म एक ही है और वह सबको दिया गया है, लेकिन समस्त धर्मों के अनुयायी धार्मिक सत्य से अलग हो गये है, क्योकि उन्होने धर्म की वास्तविकता और उसकी एकता नष्ट कर दी है, और अपनी गुमराही से अलग अलग टोलियाँ बना ली है। अगर इस गुमराही स लाग हट जायँ और अपने अपन धर्म की वास्तविक शिक्षा को अपना लें, तो सब धार्मिक झगडे स्वय मिट जायँगे। प्रत्येक गिरोह देख लगा कि उसका मार्ग भी वास्तव मे वही है जो और गिरोहा का है। कुरान कहता है कि सभी धर्मों का यही सर्वसम्मत और सवस्वीकृत सत्य 'अद्दीन' है, यानी मनुष्यजाति के लिए यही वास्तविक धर्म है और इसी को वह 'अल् इस्लाम' के नाम से पुकारता है।

(७) मनुष्य जाति के पारस्परिक प्रेम और ऐक्य के जितने भी सम्बन्ध हो सकते थे, सब मनुष्यो के ही हाथों टूट चुके। सब की

नसल एक थी, परन्तु हजारों हो गई। सबकी जाति एक थी, परन्तु असख्य जातियाँ बन गई। सबका जन्मस्थान एक ही था, पर वे अलग अलग देशों में बट गये। सब का दरजा एक था, लेकिन अमीर और गरीब, कुलीन तथा अकुलीन, ऊँच और नीच बहुत सी श्रेणियाँ बना ली गई। ऐसी अवस्था मे वह कौन सा सम्बन्ध है जो इन सब विभिन्नताओ और विषमताओं को मिटा कर मनुष्यमात्र को एक ही पक्ति मे ला खडा कर सकता है? कुरान कहता है कि वह सम्बन्ध ईश्वर भक्ति का सम्बन्ध है, जो मनुष्य के बिछडे हुए परिवार को फिर से एकत्र कर दे सकता है। यह विश्वास कि हम सब का पालनकर्ता एक ही है, और हम सब के सिर उसी एक की चौखट पर झुके हुए हैं, ऐक्य और प्रेम के ऐसे भाव हममे उत्पन्न कर देता है कि मनुष्य निर्मित भेदो का उन पर विजयी हो सकना सर्वथा असम्भव है।